अप्रैल 2018

दादावाणी

कीमत ₹ 15

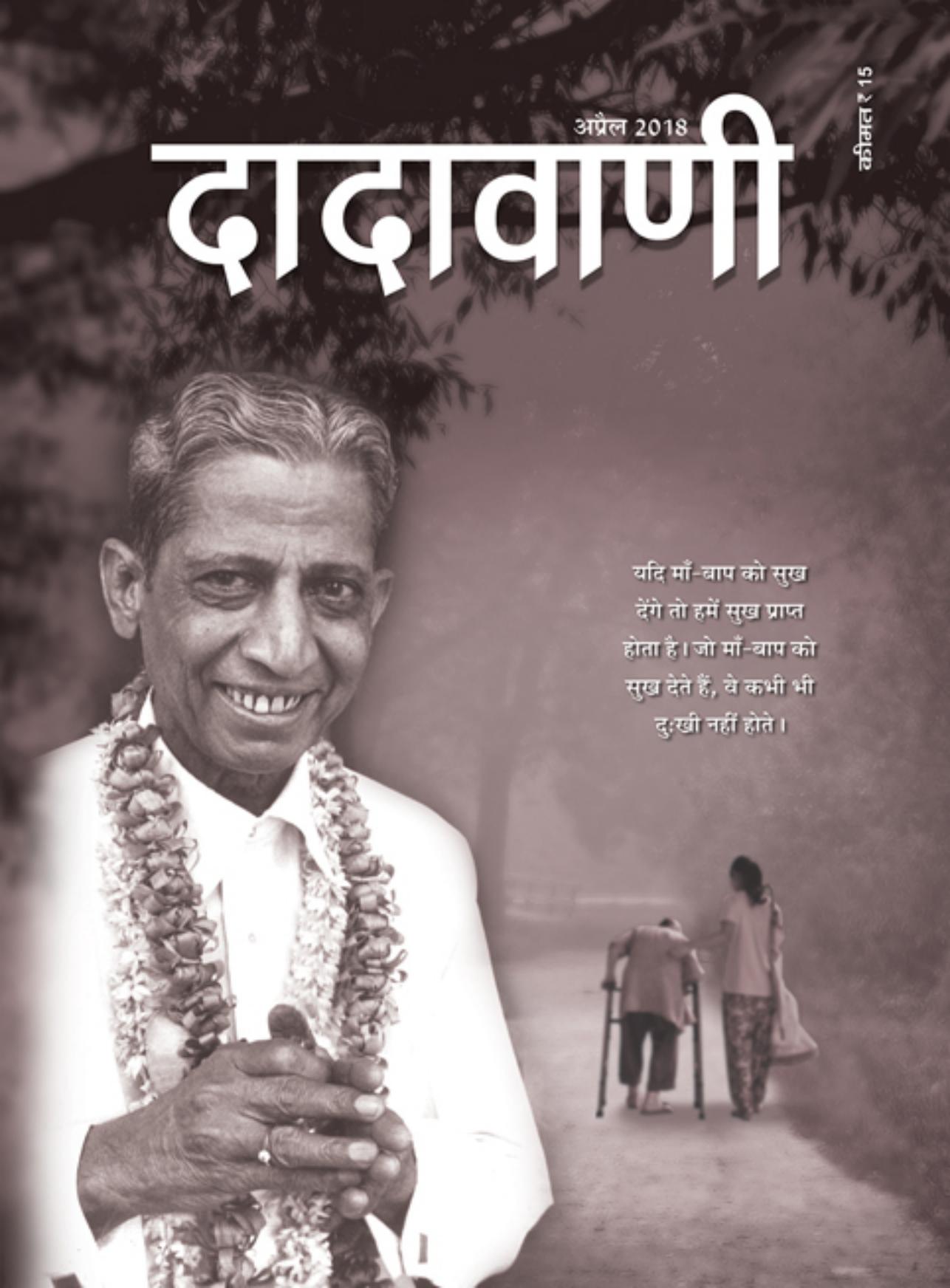

यदि माँ-बाप को सुख देंगे तो हमें सुख प्राप्त होता है। जो माँ-बाप को सुख देते हैं, वे कभी भी दुःखी नहीं होते।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 13 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 150
अप्रैल 2018

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj - 382421,
Dist-Gandhinagar.
Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj - 382421,
Dist-Gandhinagar.
Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj - 382421,
Dist-Gandhinagar.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

चुकाएँ ऋण माता-पिता के, सेवा द्वारा

संपादकीय

हिन्दू संस्कृति में 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' की आदर्श भावना सदियों से प्रचलित है। बचपन में जब स्कूल में पढ़ते थे, तब विद्यार्थियों को श्रवण की यह कहानी सुनाकर माता-पिता की सेवा का पाठ पढ़ाया जाता था कि श्रवण अपने अंधे माता-पिता को कावड़ में बैठाकर यात्रा कराने ले जाता था। इतना सुंदर है अपने हिन्दुस्तान का विज्ञान! जिसमें धार्मिकता के साथ अपनी संस्कृति के संस्कारों का समन्वय भी देखने को मिलता है। इसीलिए तो धर्म शास्त्रकारों ने ऐसा कहा है न, कि 'माँ-बाप की सेवा करना।' माँ-बाप की सेवा का महत्व, शास्त्रों में भी दर्शाया गया है।

पहले माँ-बाप की सेवा, जिन्होंने हमें जन्म दिया, उसके बाद गुरु की सेवा। माता-पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिए। हम पर उनका उपकार है कि उन्होंने अनेक तकलीफें उठाकर हमारा पालन-पोषण किया, पढ़ाया और संस्कार दिए। यों देखने जाएँ तो, माँ-बाप की ज़िंदगी बच्चों के जीवन में ही समायी रहती है तो फिर जीवनभर माँ-बाप का उपकार कैसे भूल सकते हैं? जीवन में कभी भी उनके प्रति विनय व पूज्य भाव नहीं चूकना चाहिए।

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) बुज़ुर्गों की व्यथा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, 'अभी यदि कोई सब से ज़्यादा दुःखी है तो वे हैं साठ-पैसठ साल वाले बुज़ुर्ग!' घर में सभी की ठोकरें खानी पड़ती हैं! शरीर भी दगा दे देता है, वह न तो कहा जा सकता है, न ही सहा जा सकता है! वे कहें किससे? बच्चे सुनते ही नहीं हैं। पुराने और नए ज़माने के बीच अंतर बढ़ गया है। बुज़ुर्ग भी पुराना नहीं छोड़ते और नई पीढ़ी उनकी व्यथा को नहीं समझ सकती। अतः अंतर-भेद बढ़ता जाता है।

दादाश्री, नई युवा पीढ़ी को संबोधित करते हुए कहते हैं कि यदि आपके माँ-बाप खुश रहेंगे तो आपको कभी भी असंतोष नहीं रहेगा, उसकी गारन्टी लिखकर देता हूँ। जो व्यक्ति माता-पिता के दोष देखता है, उसमें कभी भी बरकत ही नहीं आती। भले ही वह धनवान हो लेकिन उसकी आध्यात्मिक उन्नति कभी भी नहीं होगी। माता-पिता की सेवा, विनय और उनका *राजीपा* प्राप्त करना, ये सब तो आध्यात्म में आगे बढ़ने का आधार हैं। चाहे ब्रह्मचारी हो या शादीशुदा, माता-पिता का तिरस्कार करके कोई प्रगति नहीं हो सकती! हाँ, धीरे-धीरे उन्हें समझा-बुझाकर काम ले सकते हैं।

माता-पिता की सेवा का महत्व समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि, 'वीतराग भगवान और बहुत से संतपुरुषों ने भी अंत तक माता-पिता की सेवा की थीं। उनके प्रति हमारा व्यवहार आदर्श होना चाहिए।'

प्रस्तुत अंक में माता-पिता और बच्चों, सभी को व्यवहार की सुंदर चाबियों के साथ-साथ, अध्यात्म की यथार्थ समझ मिलेगी। इससे हम सभी के जीवन आदर्श बनें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

चुकाएँ ऋण माँ-बाप के, सेवा द्वारा

मनुष्य जीवन की सार्थकता

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के कर्तव्य के बारे में आप कुछ बताएँगे?

दादाश्री : मनुष्य के कर्तव्य में, जिसे वापस मनुष्य ही बनना है तो उसको लिमिट (सीमा) बताऊँ। ऊपर नहीं जाना है अथवा नीचे नहीं जाना है। ऊपर देव गति है और नीचे जानवर गति है और उससे भी नीचे नरक गति है। ऐसी बहुत प्रकार की गतियाँ हैं। आप सिर्फ मनुष्यों के बारे में ही पूछ रहे हैं?

प्रश्नकर्ता : जब तक देह है तब तक तो मनुष्य के ही कर्तव्य पालन करने होंगे न?

दादाश्री : मनुष्य के कर्तव्य का पालन करने से ही तो मनुष्य बने हैं। उसमें आप उत्तीर्ण हो चुके हो तो अब किसमें उत्तीर्ण होना है? संसार दो तरह से है। एक तो यह कि यदि मनुष्य जन्म में आने के बाद क्रेडिट (पुण्य) जमा करते हैं तो उच्च गति में जाते हैं। डेबिट (पाप) जमा करते हैं तो निम्न गति में जाते हैं और यदि क्रेडिट-डेबिट दोनों का व्यापार बंद कर दें तो मुक्ति पाते हैं। चार गतियाँ हैं। बहुत क्रेडिट हो तो देव गति। क्रेडिट ज़्यादा और डेबिट कम हो तो मनुष्य गति। डेबिट ज़्यादा और क्रेडिट कम हो तो जानवर गति और पूरा डेबिट हो तो नरक गति। ये चारों गतियाँ और पाँचवीं जो है, वह है मोक्ष गति। ये पाँचों रास्ते खुले हैं। मनुष्य ये चारों गतियाँ प्राप्त कर सकते हैं और पाँचवीं गति तो हिन्दुस्तान के मनुष्य ही प्राप्त कर सकते हैं!

अब, यदि फिर से मनुष्य बनना है तो बुज़ुर्ग माता-पिता और गुरु की सेवा करनी चाहिए। लोगों के प्रति ओब्लाइजिंग नेचर (परोपकारी स्वभाव) रखना चाहिए। इस प्रकार व्यवहार शुद्ध रखो। सामने वाले के साथ कुछ लेन-देन न रहे, उस तरह से व्यवहार करो, संपूर्ण शुद्ध व्यवहार।

माता-पिता की सेवा करने से कभी दु:ख नहीं आते

प्रश्नकर्ता : युवा पीढ़ी को गुरु की सेवा के साथ-साथ, माता-पिता की भी सेवा करनी चाहिए। यदि माता-पिता की सेवा नहीं करेंगे तो कौन सी गति प्राप्त होगी?

दादाश्री : पहले माता-पिता की सेवा। उनकी, जिन्होंने जन्म दिया। उसके बाद गुरु की सेवा। गुरु और माता-पिता की सेवा अवश्य करनी ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अभी जो लोग माता-पिता की सेवा नहीं करते, उनका क्या होगा? उन्हें कौन सी गति मिलेगी?

दादाश्री : जो माता-पिता की सेवा नहीं करते, वे इस जन्म में सुखी नहीं होंगे। माता-पिता की सेवा करने से क्या फायदा है? तब कहेंगे कि

जीवन में कभी भी दुःख नहीं आएँगे। अड़चनें नहीं आएँगी!

अपने हिन्दुस्तान का विज्ञान तो बहुत सुंदर था। इसीलिए तो शास्त्रकारों ने ऐसा लिखा कि, 'माता-पिता की सेवा करना। ताकि आपको जीवन में कभी भी धन की कमी न हो।' अब यह बात अलग है कि यह नियमानुसार है या नहीं लेकिन माता-पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिए। यदि आप सेवा नहीं करोगे तो आपकी सेवा कौन करेगा? आपके बाद वाली प्रजा किस तरह से सीखेगी कि आप सेवा करने लायक हो? बच्चे सब देखते हैं। वे देखते हैं कि हमारे (फादर) पिताजी ने ही कभी अपने माता-पिता की सेवा नहीं की है तो फिर संस्कार तो आएँगे ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : मुझे जानना था कि पुत्र का पिता के प्रति क्या फर्ज़ है?

दादाश्री : बच्चों को पिता के प्रति फर्ज़ निभाना चाहिए और यदि बच्चे फर्ज़ निभाएँगे तो बच्चों को क्या फायदा होगा? जो बच्चे माता-पिता की सेवा करते हैं, उन्हें कभी भी पैसों की कमी नहीं पड़ती, उन्हें ज़रूरत की सारी चीज़ें मिल जाती हैं। जो गुरु की सेवा करते हैं वे मोक्ष में जाते हैं लेकिन आजकल के लोग तो माता-पिता या गुरु की सेवा ही नहीं करते न? वे सभी लोग दुःखी होंगे।

कभी भी कर्मों पर नहीं छोड़ सकते, जितनी हो सके उतनी मदद करनी है

प्रश्नकर्ता : सभी अपने-अपने कर्मों का फल भुगतते हैं तो जब माता-पिता बीमार हो जाएँ तब हमें क्या उन्हें उनके कर्मों को भुगतने देना हैं? कुछ नहीं करना है?

दादाश्री : नहीं! नहीं। या तो आपको उनके पास जाना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए और यदि सेवा नहीं करनी हैं तो व्यर्थ में बोलने का कोई अर्थ नहीं है। दूर रहकर तालियाँ बजाने की ज़रूरत नहीं है। यदि आप प्रेम भाव वाले हो तो वहाँ पहुँच जाओ। प्रेम भाव वालों को माता-पिता की सेवा करनी चाहिए और जिन्हें प्रेम भाव नहीं है उन्हें व्यर्थ में शिकायत करने का कोई मतलब नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, उनके पास पहुँच जाने से क्या उन लोगों के कर्मों की पीड़ा में कुछ फर्क आ जाएगा?

दादाश्री : वह तो गप्प कहा जाएगा! वह तो गुनाह कहलाएगा! यदि आपको प्रेम भाव है तो वहाँ पहुँच जाना चाहिए। तब कुछ न कुछ हेल्प हुए बिना तो रहेगी नहीं। प्रेम भाव है लेकिन (आपको कुछ) करना नहीं है तो यहाँ से शोर मचाने का कोई अर्थ नहीं है। और क्या किसी भाव वाले ने पैसे भेजे हैं? उनके लिए पैसे खर्च करके उन लोगों की हेल्प के लिए बहुत लोग वहाँ पर गए हैं। तूने पैसे भेजे हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, भेजे हैं दादा।

दादाश्री : यदि आप खुद नहीं जा पाओ तो पैसे भेजकर हेल्प करनी चाहिए। हेल्प तो आपको करनी ही चाहिए। यों ही उनके कर्म पर नहीं छोड़ सकते।

माता-पिता की सेवा ही धर्म है

एक भाई, मुझे एक बड़े आश्रम में मिले। मैंने उनसे पूछा, 'आप यहाँ कैसे?' तब उन्होंने कहा, 'मैं पिछले दस सालों से इस आश्रम में रहता हूँ।' तब मैंने उनसे कहा कि, 'आपके माता-पिता गाँव में बहुत ही गरीबी में, अंतिम अवस्था में दुःखी हैं।' तब उन्होंने कहा, 'उसमें मैं क्या करूँ? यदि मैं उनका करने जाऊँगा तो मेरा धर्म करना रह जाएगा।' इसे धर्म कैसे कहेंगे? धर्म तो

उसे कहते हैं कि जिसमें माता-पिता को बुलाएँ, भाई को बुलाएँ, सभी को बुलाएँ। व्यवहार आदर्श होना चाहिए। जो व्यवहार माता-पिता के संबंध को भी अस्वीकार करे, उसे धर्म कैसे कहेंगे?

आपके माता-पिता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : माँ है।

दादाश्री : अब सेवा करना, अच्छे से। बार-बार ऐसा मौका नहीं मिलता और यदि कोई व्यक्ति कहेगा, 'मैं दु:खी हूँ', तो मैं कहूँगा कि तेरे माता-पिता की अच्छी तरह से सेवा कर तो तुझे संसार में दु:ख नहीं सहने पड़ेंगे। भले ही तू धनवान नहीं बन पाएगा लेकिन दु:खी तो होगा ही नहीं, उसके बाद में धर्म होना चाहिए। इसे धर्म कहेंगे ही कैसे?

दुनिया में और कोई भी धर्म नहीं है। सिर्फ इतना ही धर्म है कि दूसरों को सुख देंगे तो हम सुखी होंगे।

सेवा से प्राप्त करो, माता-पिता का राजीपा

प्रश्नकर्ता : जिनके माता-पिता बच्चों के साथ रहते हैं तो उन्हें सामाजिक जीवन किस तरह से जीना चाहिए? माता-पिता को किस तरह से जीना है और बच्चों को किस तरह से जीना है? यह एक बड़ी पज़ल है तो ऐसा कोई रास्ता निकलना चाहिए ताकि उन्हें समझ में आए।

दादाश्री : परस्पर सभी को सुख देने का प्रयत्न करें और दु:ख तो देना ही नहीं है। सुख ही देने का प्रयत्न करें।

प्रश्नकर्ता : सुख की परिभाषा क्या है? सुख किस तरह से देना है?

दादाश्री : जैसा माता-पिता को पसंद है, वह खुद उसी तरह से रहे, खुद को उनके अधीन ही रहना होगा। जिन्हें यह ज्ञान है न, उनका आत्मा तो अलग ही होता जाएगा। यदि बच्चे पिता के अधीन रहें, पिता के कहे अनुसार, अच्छा नहीं लगे फिर भी पिता के अधीन ही रहें और उल्टा नहीं चलेगा तो फिर सोचने पर उसे शांति मिलेगी, भीतर सुख होगा। वह सुख कहाँ से आया? तब कहते हैं, यह जो पराधीनता थी, वह दु:ख ही था। बाद में भीतर स्वाधीनपने का सुख उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : स्वाधीनपने का सुख किस तरह से उत्पन्न होता है?

दादाश्री : जब पिता के कहे अनुसार चलता है तब उसे लगता है कि 'यह परवशता है', लेकिन बाद में इसमें सुख महसूस होता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह बात पक्की हो गई कि माता-पिता के कहे अनुसार चलना चाहिए।

दादाश्री : चलना ही चाहिए न! उसी को संसार कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् माता-पिता का *राजीपा* (कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करना चाहिए?

दादाश्री : माता-पिता का *राजीपा* प्राप्त करना पड़ेगा उसके लिए सब कुछ करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : संसार में पहला फर्ज़ तो यही है न? मन-वचन-काया से, किसी भी प्रकार से, माता-पिता को किंचित्मात्र भी दु:ख न हो, यह पहली बात हुई।

दादाश्री : सिर्फ माता-पिता के प्रति ही नहीं बल्कि चाचा, मामा, फूफा सभी के प्रति, हर एक के प्रति। और पिता को समझना चाहिए कि बेटे बहू के प्रति क्या फर्ज़ निभाना है, सभी के प्रति फर्ज़ निभाना है।

धर्मसहित फर्ज़ निभाना है

प्रश्नकर्ता : सांसारिक फर्ज़ और धर्म कार्य के बीच किस तरह से समन्वय रखें?

दादाश्री : सांसारिक फर्ज़ तो अनिवार्य हैं ही। माता-पिता को समझना चाहिए कि बच्चों के प्रति अपना फर्ज़ निभाना अनिवार्य है। बच्चों को ऐसा समझना चाहिए कि मुझ पर उपकार किया है इसलिए मुझे उनके प्रति प्रेम भाव रखना है, इस तरह की मान्यता रहनी चाहिए। वर्ना यदि उसे सिर्फ अनिवाय मानोगे तो मिकेनिकली (यंत्रवत) हो जाएगा। तब माता-पिता के प्रति सेवा का भाव खत्म हो जाएगा न!

अब, सांसारिक फर्ज़ निभाते समय धर्म व कार्य के बीच समन्वय कैसे रहेगा? तब कहते हैं कि यदि बेटा उल्टा बोले फिर भी आपको अपने धर्म चूके बगैर फर्ज़ निभाना है। आपका धर्म क्या है? कि बच्चे को पाल-पोस कर बड़ा करना। उसे सही रास्ते पर आगे बढ़ाना। अब जब वह उल्टा बोल रहा है तब आप भी उल्टा बोलने लगो तो क्या होगा? वह बिगड़ जाएगा। इसलिए आपको उसे प्रेम से वापस समझाना है कि, 'देखो भाई, ऐसा है, ऐसा है।' अर्थात् सभी फर्ज़ों में धर्म होना ही चाहिए। यदि धर्म को नहीं रहने दिया तो उस वैक्युम (जगह) में अधर्म में घुस जाएगा। कमरा खाली नहीं रह सकता। यदि आप यहाँ कमरा खाली छोड़ दोगे हो तो कोई भी ताला तोड़कर घुस जाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : राइट। (सही है)

दादाश्री : तो वहाँ पर भी खाली नहीं रख सकते। वहाँ धर्म डाल ही देना। वर्ना, अधर्म घुस जाएगा। अत: हर एक फर्ज़ धर्मसहित निभाना चाहिए। मन में आए, उस तरह से नहीं। जो मन में आए उसमें फिर धर्म रखकर, अच्छी तरह से फर्ज़ निभाना चाहिए। समन्वय किस तरह से करना है, समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् फर्ज़ और धर्म उन दोनों को एक ही हैं, ऐसा मानकर वर्तन करना है?

दादाश्री : नहीं, फर्ज़ का मतलब अनिवार्य है। धर्म का मतलब नैचुरल लॉ (कुदरत का नियम) है। दो प्रकार के धर्म हैं। एक आत्म धर्म और दूसरा देहाध्यास रूपी धर्म, जिससे सुख प्राप्त होता है। जो अशुद्ध और अशुभ है, वह अधर्म है और जो शुभ है, वह धर्म है। किसी का भला करना, किसी को सुख देना, किसी की हेल्प करनी, किसी को दान देना, वह सब धर्म कहा जाता है लेकिन वह देहाध्यास रूपी धर्म कहलाता है, वह मुक्ति धर्म नहीं है। मुक्ति धर्म तो आत्म धर्म में, स्वधर्म में आने के बाद ही हो सकता है।

दादा सिखाते हैं, व्यवहार धर्म

संसार के लोगों को व्यवहार धर्म सिखाने के लिए हम कहते हैं कि परानुग्रही बनो। खुद अपने लिए विचार ही न आए। लोक कल्याण के लिए परानुग्रही बनो। यदि तू अपने खुद के लिए खर्च करेगा तो वह गटर में जाएगा जबकि औरों के लिए कुछ भी खर्च करना आगे का एडजस्टमेन्ट है।

संसार का स्वरूप कैसा है? जगत् के जीव मात्र में भगवान विराजमान हैं इसलिए किसी भी जीव को कोई भी त्रास (कष्ट) दोगे, दु:ख दोगे तो उससे अधर्म होगा। किसी भी जीव को सुख दोगे तो उससे धर्म होगा। अधर्म का फल है आपकी इच्छा के विरुद्ध होना और धर्म का फल है आपकी इच्छानुसार होना।

शुद्धात्मा भगवान क्या कहते हैं? कि जो औरों का संभालता है, मैं उसका सब संभाल लेता हूँ जबकि जो खुद का ही संभालता है, उसका मैं उसी पर छोड़ देता हूँ।

आप संसार का काम करो, आपका काम होता ही रहेगा। यदि आप संसार का काम करोगे तो आपका काम अपने आप होता रहेगा और तब आपको आश्चर्य होगा!

दादा का ओब्लाइज़िंग नेचर

यह लाइफ यदि परोपकार में बतेगी तो आपको कोई भी कमी नहीं रहेगी। आपको किसी भी तरह की आपको अड़चन नहीं आएगी। आपकी जो-जो इच्छाएँ हैं, वे सभी पूरी होंगी और इस तरह उछल-कूद करोगे तो एक भी इच्छा पूरी नहीं होगी क्योंकि वे सब तरीके, आपको नींद ही नहीं आने देंगे। इन सेठों को तो नींद ही नहीं आती है, तीन-तीन, चार-चार दिन तक सो ही नहीं पाते क्योंकि लूटपाट ही की है, जिस-तिसकी।

इसलिए हम ने ओब्लाइजिंग नेचर रखा। जैसे कि राह चलते पड़ोस में किसी से पूछकर जाते थे कि, 'भाई, मैं पोस्ट ऑफिस जा रहा हूँ। आपको कोई खत पोस्ट करना है?' इस तरह पूछते-पूछते जाने में क्या हर्ज है? कोई कहे कि, 'मुझे तुझ पर विश्वास नहीं है।' तब कहें, 'भाई, पैर पड़ता हूँ' लेकिन जिन्हें विश्वास आता है, उनका तो ले जाएँ।

यह तो मैं वह बता रहा हूँ जो मेरा बचपन का गुण था, ओब्लाइजिंग नेचर! पच्चीस साल की उम्र में मेरा पूरा फ्रेन्ड सर्कल मुझे सुपर ह्युमन कहता था।

ह्युमन कौन कहलाता है कि जो लेता और देता है, समान भाव से व्यवहार करता है। जो सुख दे उसे सुख देता है। जो दुःख दे, उसे दुःख नहीं देता। ऐसा सब व्यवहार करना, वह मनुष्यपना कहलाता है।

जो सामनेवाले का सुख ले लेता है, वह पशु योनी में जाता है। जो खुद सुख देता है और सुख लेता है, ऐसा मानवीय व्यवहार करता है, वह मनुष्य में रहता है और जो खुद का सुख दूसरों को भोगने के लिए दे देता है, वह देवगति में जाता है, सुपर ह्युमन। जो अपना सुख दूसरों को, किसी दुःखी को दे दे वह देवगति में जाता है।

मनुष्य ने जब से किसी को सुख पहुँचाना शुरू किया तब से धर्म की शुरुआत हुई। खुद का सुख नहीं लेकिन सामनेवाले की अड़चन कैसे दूर हो, यही रहा करे वहाँ से कारुण्यता की शुरुआत होती है। हमें बचपन से ही सामनेवाले की अड़चन दूर करने की पड़ी थी। खुद के लिए विचार भी नहीं आए, वह कारुण्यता कहलाती है। उससे ही 'ज्ञान' प्रकट होता है।

वीतरागों का आदर्श व्यवहार

मैंने भी माँ की सेवा की थी। तब मेरी उम्र बीस साल की थी यानी जवानी की उम्र थी इसलिए माँ की सेवा हो पाई। पिता जी को कंधे पर रखकर ले गए थे, बस उतनी ही सेवा हो पाई। फिर हिसाब समझ में आया, ऐसे तो कितने ही पिता जी हो चुके! अब क्या करेंगे? तब कहते हैं, 'जो हैं उनकी सेवा कर। जो चले गए, वे गोन परंतु अभी जो हाज़िर हैं, तू उनकी सेवा कर। जो नहीं हैं, उनकी चिंता मत करना। ऐसे तो बहुत हो चुके हैं। जहाँ से भूले वहाँ से वापस मुड़ो। माता-पिता की सेवा तो प्रत्यक्ष नक़द फल है। भगवान दिखाई नहीं देते, ये तो दिखाई देते हैं। भगवान कहाँ दिखाई देते हैं? जबकि माता-पिता तो दिखाई देते हैं।

वीतराग (महावीर) भगवान ने अंत तक माता-पिता की सेवा की। अपना व्यवहार आइडियल (आदर्श) होना चाहिए।

माता-पिता की खूब सेवा करनी है वह भी अनिवार्य है। यदि आप वह फर्ज़ नहीं निभाओगे तो लोग आपको डाँटने आएँगे कि आप कैसे इंसान हो? माता-पिता का ध्यान नहीं रखते?

आपके टेढ़ेपन के कारण आपको टेढ़ा मिला

प्रश्नकर्ता : दादा, कुछ माता-पिता बहुत संस्कारी होते हैं परंतु उनके बच्चे बहुत खराब होते हैं तो उसका क्या कारण है?

दादाश्री : इंदौरी गेहूँ बहुत उच्च प्रकार के होते हैं लेकिन अगर उन्हें यहाँ पर बोएँ तो ज़मीन खराब है, खाद अच्छा नहीं है, पानी खारा है तो कैसे गेहूँ उगेंगे?

प्रश्नकर्ता : खराब उगेंगे।

दादाश्री : इसी तरह से यह सब हो गया है, सब कचरा इकट्ठा हो गया है। खारा पानी मिल गया है और फिर वह नियम से बाहर नहीं है, खुद का जो हिसाब है, वापस वही माल मिला है। यदि बेटा नालायक है तो आपको समझ जाना चाहिए कि मुझ में नालायकी दिखाई नहीं देती है लेकिन यह मेरी ही नालायकी है। आपकी नालायकी इसमें दिखाई देती है। प्रत्यक्ष फोटो के रूप में, आपको समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह वाक्य काम में आएगा क्या? यह बात आपके काम आएगी!

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ।

दादाश्री : यहाँ पर भगवान ही सब नहीं करते और अन्य कोई भी हाथ नहीं डालता, यह सब आपका अपना ही है। बच्चा अच्छा है तो वह भी आपका फोटो है और खराब हों तो वह भी आपका फोटो है।

अरे! बच्चे खराब होते हैं न! एक बच्चा तो इसने राजसी तरीके में पला, वह जब बड़ा हुआ तब पिता से कहने लगा, 'ज़ायदाद मेरे नाम कर दो।' तब उसके पिता ने कहा, 'अभी नहीं मिलेगी भाई, जब मैं चला जाऊँगा तब मिलेगी।' उस लड़के ने झगड़ा करके कोर्ट में दावा किया। उसमें उसका पिता हार गया। तब फिर उस लड़के ने वकील से क्या कहा? जब वकील ने कहा न, कि 'देखा मैंने तेरे पिता को हरा दिया न!' तब वह कहने लगा, 'यदि अभी इनकी और भी बेइज़्ज़ती करवाओ तो तीन सौ रुपए ज़्यादा दूँगा!' क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : बेइज़्ज़ती!

दादाश्री : हाँ, इतना हराया फिर भी उसे संतोष नहीं हुआ। वकील से कहा, 'यदि और बेइज़्ज़ती करवाओ तो तीन सौ रुपए ज़्यादा दूँगा।' देखो अब उसका नाम... ऐसे भी बच्चे होते हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जबकि कुछ बच्चे तो माता-पिता की सेवा करते हैं। ऐसी सेवा करते हैं कि कुछ भी खाए-पीए बिना सेवा करते हैं। अर्थात् ऐसा कुछ नहीं है, यह सब आपका ही हिसाब है। आपका अपना ही हिसाब है, आपकी ही गलती है तभी आपको ऐसा सब मिला। आप इस कलियुग में यहाँ क्या करने आए? सत्युग नहीं था? सत्युग में सब सीधे थे जबकि कलियुग में सब टेढ़े ही मिलते हैं।

समान सिंचन होने के बावजूद हिसाब अनुसार बीज

प्रश्नकर्ता : एक पिता के तीन बेटे हों और एक बेटा सेवा करता है और दूसरे दो बेटे लेफ्ट-राइट करवाते हैं तो उसका क्या कारण है?

दादाश्री : जैसा जिसका हिसाब होता है न, वह उसी तरह से फल देता है। अगर किसी ने खेत में एक पेड़ लगाया तो वह कड़वे फल देता है जबकि कोई दूसरा पेड़ मीठे फल देता है। जैसे कड़वी गिलकी वगैरह सब होते हैं न? एक खेत में सभी गिलकियाँ एक ही साथ लगी होती

हैं लेकिन कोई मीठी होती है और कोई कड़वी होती है। इसी तरह से कुछ बच्चे कड़वे होते हैं और कोई बच्चा मीठा होता है। माता-पिता भी कड़वे होते हैं भाई!

प्रश्नकर्ता : परवरिश तो सभी की एक समान होती है न!

दादाश्री : परवरिश एक ही समान, कड़वी गिलकी और मीठी गिलकी दोनों की परवरिश एक ही समान मिलती है; नीम और आम को भी एक समान। सभी की परवरिश एक समान; लेकिन सब अपने-अपने स्वभाव के अनुसार होते हैं। बीज में जैसा गुण होता है वह वैसा ही बनता है।

प्रश्नकर्ता : बीज भी एक ही होता है न?

दादाश्री : नहीं! बीज एक नहीं होता। बीज तो तरह-तरह के होते हैं। जैसे कि यह आम, नीम, इसी प्रकार तरह-तरह के बीज और परवरिश एक समान ही।

प्रश्नकर्ता : अगर एक ही प्रकार के बीज बोए हों तो?

दादाश्री : एक प्रकार के बीज नहीं बो सकते न! बीज तो तरह-तरह के डलते हैं। कौन सा बीज डला है, वह तो उगने के बाद पता चलता है। जब उसका फल खाते हैं, चखते हैं तब पता चलता है कि यह गिलकी कड़वी है! तब तक तो हमें समझ में भी नहीं आता, गिलकी कड़वी है या नहीं लेकिन जब फल चखते हैं, तब पता चलता है।

प्रश्नकर्ता : अगर सभी बीज एक ही गिलकी में से निकाले गए हों तो?

दादाश्री : यह तो सिर्फ ऐसा लगता है कि सभी बीज एक ही गिलकी के हैं। लेकिन ये तो मनुष्य हैं न! मनुष्य खुद पल-पल बदलता ही रहता है। अत: जैसे-जैसे अपने हिसाब हों उसके अनुसार सभी बीज उत्पन्न होते रहते हैं। कोई बीज कड़वा होता है, जबकि कोई बीज मीठा होता है।

आपको किए हुए कर्मों के फल भुगतने हैं। जो आपने किए हैं न, उनके फल भुगतने हैं। बेटा सेवा भी करता है और मेवा भी खिलाता है।

हमें ऐसा करना है कि हम किसी को दु:ख न दें, तब फिर हमारे घर में हमें दु:ख देने वाला कोई जीव आएगा ही नहीं। जिसका खेत साफ-सुथरा है, जो चीज़ बोनी है, उसे बीनकर, साफ करके बोएँ तो फिर सभी अच्छे दाने उगेंगे और अगर कभी कुछ खराब उग जाए तो उसे उखाड़कर फेंक देंगे तो भी चलेगा। लोग तो गलत करने में भी कुछ बाकी नहीं रखते, तब फिर उखाड़ फेंकने की बात ही कहाँ रही?

प्रश्नकर्ता : पपीते में, एक ही बगीचा हो, एक की देख-रेख करने वाला हो, फिर भी क्या नर और मादा दोनों अलग-अलग नहीं होते?

दादाश्री : अरे! वह तो यदि मीठी गिलकी बोई हो फिर भी बीच में (ठीकरी) खपरैल का टुकड़ा आने से वह सब कड़वी हो जाती है, उसमें क्या देर लगती है?

यदि हम साफ-सुथरे होंगे न तो कोई हमारा नाम ही नहीं ले सकता, ऐसा है। यदि आप साफ-सुथरे हो तो आपके यहाँ बच्चे भी साफ-सुथरे ही आएँगे। ये सभी आपके और मेरे ऋणानुबंध के कारण ही मिले हैं।

आपको नुकसान हुआ, गाली दी, वह पहले उसका नुकसान किया होगा न तो उसका आपके साथ हिसाब बंध गया इसीलिए आप उस हिसाब को चुकाने के लिए उसके पास आए हो। यह

सिर्फ रुपए की चिंता नहीं है। सिर्फ, रुपए का लेन-देन नहीं है। अन्य बहुत सी झंझट है। रुपए का लेन-देन तो किसी-किसी का ही रहता है फिर अन्य सभी झंझटे खत्म हो जाती हैं। राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ और क्लेश वगैरह उन सभी का हिसाब लेने के लिए बच्चे बनकर आते हैं।

रिलेटिव संबंध में नहीं दिखाई देता शाश्वत संबंध

ज्ञान होने से पहले हीरा बा हमसे कहते थे, 'बच्चे मर गए। अब बच्चे नहीं हैं तो हम क्या करेंगे? बुढ़ापे में सेवा कौन करेगा? यह बात उन्हें भी परेशानी करती थी! नहीं करेगी? तब मैंने उनसे कहा, 'आजकल के बच्चे आपका दम निकाल देंगे। वे जब शराब पीकर आएँगे, तब क्या आपको अच्छा लगेगा?' तब वे कहने लगीं, 'नहीं, वह तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।' जो आए थे वे चले गए इसीलिए मैंने पेड़े खिलाए।' उसके बाद जब उन्हें अनुभव हुआ, तब वे मुझ से कहने लगीं, 'सभी के बच्चे बहुत दु:ख देते हैं।' तब मैंने कहा, 'हम ने आपसे पहले ही कहा था लेकिन आप मान नहीं रहे थे!'

यह पराया क्या कभी अपना हो सकता है भला? बेकार में हाय-हाय करते हैं! जब यह शरीर ही पराया है तो फिर इस शरीर के रिश्तेदार। यह पराया और फिर पराये की संपत्ति, क्या वह अपनी हो सकती है?

यह सब तो पराई पीड़ा है। बेटा ऐसा नहीं कहता है कि आप सब मुझ पर निर्भर रहो जबकि यह तो, पिता ही बच्चे पर निर्भर रहता है। यह आपकी ही भूल है। इस कलियुग में तो लेनदार ही बेटे बनकर आते हैं! यदि आप ग्राहक से कहें, 'मुझे तेरे बगैर अच्छा नहीं लगता, तेरे बगैर अच्छा नहीं लगता' तो ग्राहक क्या करेगा? आपको मारेगा। ये तो 'रिलेटिव' रिश्ते हैं, इनमें से ही कषाय उत्पन्न होते हैं। राग कषाय में से द्वेष कषाय उत्पन्न होते हैं। उन्हें उभरने ही नहीं देना है। जिस प्रकार से खीर में उफान आने पर लकड़ी निकाल लेनी पड़ती है न, उसी जैसा है यह।

बच्चों को हमसे कोई लेना-देना नहीं है। यह तो बिना काम की परेशानी! सभी कर्म के अधीन हैं। यदि यथार्थ रिश्ता होता न तो घर में सभी तय करते कि हमें घर में झगड़ा नहीं करना है जबकि ये तो घंटे-दो घंटे बाद लड़ पड़ते हैं! क्योंकि किसी के हाथ में कुछ है ही नहीं न! ये सब तो कर्मों के उदय, जैसे पटाके फूटते हैं वैसे फटाफट-फटाफट फूटते हैं!

यह मोह किस पर है? नकली सोने पर? अगर असली हो तो मोह कर सकते हैं। यह तो ग्राहक और व्यापारी जैसा संबंध है। यदि माल अच्छा मिले तो ग्राहक पैसे देता है यह संबंध ऐसा है। यदि सामने वाले के साथ एक ही घंटें झंझट करे तो संबंध टूट जाता है ऐसे संबंध में क्या मोह रखना?

सेठ कहता है कि 'हम क्या करें? हमें तो बेटे को ज़ायदाद देनी है।' अरे भाई, चार सौ बीसी करके कमाई की और फिर वह भी परदेस में और फिर बेटे को दे देगा? बेटा तो रिलेशन वाला है; रिलेटिव संबंध और फिर अहंकारी! यदि शाश्वत संबंध हो, रियल संबंध हो और कमाकर देता हो तो अच्छा था। यह तो समाज के दबाव के कारण ही यह रिश्ता टिका है और उसमें भी कभी-कभी बाप-बेटे लड़ते हैं, झगड़ते हैं। और ऊपर से कितने बेटे तो ऐसा कहते हैं कि 'पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ आएँगे!' जैसे कि बैलों को *पांजरापोल* (पशुओं का अनाथालय) में छोड़ आते हैं, उसी तरह ये वृद्धाश्रम! कितना सुंदर नाम रखा है! इन रिश्तों में क्यों बैठे हुए हो, वही मुझे समझ में नही आता! यदि इस रिलेशन में

संबंध में अहंकार नहीं होता तो फिर वह संबंध चला सकते थे। क्या आप नहीं जानते हैं कि बाप को कैद करके, मारकर भी राज सिंहासन हासिल किए हैं!

पाप-पुण्य के हिसाब से चलता है, जगत्

एक दिन हीरा बा कहने लगे, 'मैं गिर गई तो भी मुझे कुछ नहीं हुआ। लगी तो सही लेकिन ऐसा फ्रैक्चर जैसा कुछ नहीं हुआ जबकि आपने तो कुछ भी नहीं किया फिर भी पैर में फ्रैक्चर हो गया। आपके पुण्य से तो मेरे पुण्य ज़्यादा हैं!' तब मैंने कहा, 'पुण्य तो जबरदस्त कहलाएगा न! हमसे शादी हुई है तो आपका वह पुण्य क्या ऐसा-वैसा है?'

मैं कभी-कभी मज़ाक करता था। मैंने कहा, 'मुझे यह बुढ़ापा नहीं लाना था फिर भी मुझ में यह बुढ़ापा घुस गया।' तब वे कहने लगीं 'वह तो सभी को आता है, किसी को नहीं छोड़ता।' उनके मुँह से ऐसा बुलवाता था 'और अपना किया तो अपने को ही भुगतना पड़ता है उसमें कुछ नहीं चल सकता', ऐसा कहती थीं।

तीन महीने तक साथ रहे थे। चौबीस घंटे एक ही साथ। रात को विधि वगैरह सब कुछ करते थे। पहले उन्हें ब्लड प्रेशर था तब वे अपना सिर पैर पर टिका कर विधि करते थे। वह सब बंद हो गया। अंत तक रोज़ विधि करते थे। अंतिम दिन भी वही किया था।

बाकी, शरीर तो हमसे उठाया नहीं जाता था और वे कभी छूने भी नहीं देती थीं। इतनी विधि कर देना और फिर 'जय सच्चिदानंद' कहते थे। हमारे विधि करते ही तुरंत 'जय सच्चिदानंद' कहते थे। जय सच्चिदानंद कहते, जितनी उनकी आवाज़ निकलती उतनी परंतु मुझे सुनाई ही नहीं देता था लेकिन ये सब कहते थे कि 'उन्होंने कहा।' हमें सुनाई नहीं दें तो हम ऐसा कैसे कह सकते हैं कि 'वे कुछ भी नहीं बोले?'

कोई उनकी सेवा करता था? बच्चे नहीं थे न!

प्रश्नकर्ता : उनके पुण्य ऐसे हैं न, चौबीस घंटें कोई न कोई तो रहता ही है।

दादाश्री : तो फिर क्या वे पुण्य कम कहलाएँगे?

देखो न, उन्हें न तो बेटा है, न बहू है। फिर भी कितने सेवा करने वाले हैं! रात-दिन सेवा करते हैं। जबकि कई लोगों के तो चार-चार बेटे होने के बावजूद भी जब पराया व्यक्ति आकर पिलाए तब पानी पीते हैं। क्या उस समय बच्चे किसी काम आते हैं? वे न जाने कहाँ परदेश में पैसे कमाने गए होते हैं! ऐसा है संसार।

नहीं रखनी है आशा, निराश होने के लिए

माता-पिता की तो ऐसी इच्छा रहती है कि बड़ा होकर यह बच्चा मेरी सेवा करे। फिर चाहे सेवा करे या दुःख दे, वह डिफरेन्ट मेटर (अलग चीज़) है लेकिन वे इच्छा तो सेवा की ही रखते हैं न? कोई दुःख की इच्छा तो नहीं रखता न? वह दुःख देगा और परेशान करेगा ऐसी इच्छा तो कोई नहीं रखता न? लेकिन कई तो परेशान करते होंगे न?

प्रश्नकर्ता : करते हैं, दादा? आजकल तो अधिकतर परेशान ही करते हैं।

दादाश्री : सभी दुःख ही देते हैं, जबकि लोग आशा रखते हैं सेवा की।

मन में ऐसी आशा रखते हैं कि बुढ़ापे में सेवा करेगा। आम का पेड़ क्यों लगाते हैं? आम खाने के लिए लेकिन आजकल के बच्चे... ये आम के पेड़

कैसे हैं? उनमें दो ही आम आएँगे और पिता जी से दूसरे दो आम माँगेंगे इसलिए आशा मत रखना।

एक भाई कह रहे थे कि मेरा बेटा मुझ से पूछने लगा कि 'आपको महीने के सौ रुपए भेजूँ?' तब उन भाई ने कहा कि, 'मैंने तो उसे कह दिया कि भाई, मुझे तेरे बासमती चावल की ज़रूरत नहीं है, मेरे यहाँ बाजरा उगता है। उससे पेट भर जाता है। यह नया व्यापार कहाँ शुरू करें? जो है उसमें संतोष है।'

प्रश्नकर्ता : परंतु थोड़ी तो आशा रहती है न, कि बुढ़ापे में बेटा सेवा करेगा। मेरा बेटा है। वह मुझे सहारा देगा, सेवा करेगा।

दादाश्री : ऐसी आशा क्यों रखनी? निराश होने के लिए? जिससे निराशा उत्पन्न हुई।

माता-पिता का उपकार कैसे भूल सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : हमें बच्चों से ऐसी आशा रहती है कि वे लोग विनय सीखें, सेवा करें, क्या वह स्वार्थ कहलाएगा? माँ-बाप, बच्चों से ऐसे रिस्पेक्ट (मान) की आशा रखते हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन क्या आशा रखते हैं?

प्रश्नकर्ता : रिस्पेक्ट की, माता-पिता का रिस्पेक्ट करें, उन्हें मान दें।

दादाश्री : बच्चा माता-पिता का सम्मान नहीं करता। हं?

प्रश्नकर्ता : मान अर्थात् बहुत सन्मान नहीं परंतु विवेक रखें।

दादाश्री : यदि माता-पिता को जो लोग मान नहीं देते हैं तो वे माता-पिता, माता-पिता बनने लायक नहीं हैं और बेटा, बेटा बनने लायक नहीं है। दोनों अपनी-अपनी जो योग्यता रखते हैं, उनकी वह योग्यता खत्म हो गई है। प्रत्येक बेटे और बेटी को अपने माता-पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिए। उनका उपकार है कि उन्होंने नौ महीने तक जिस रूम में आपको रखा, उस रूम के तो रोज़ का दस हज़ार डॉलर दें फिर भी वह रूम किराए पर नहीं मिलेगा फिर भी उनका वह उपकार भूल जाते हैं। माता-पिता का उपकार कैसे भूल सकते हैं?

माता-पिता को खुश करने से, होती है कषायों पर विजय

प्रश्नकर्ता : मैं मदर-फादर की सेवा करता हूँ, मुझे हर समय ऐसा रहता है कि मैं हार्टिली करूँ और बहुत अच्छी तरह से करूँ लेकिन जब मैं करता हूँ तब मुझ में हिंसक भाव, मुँह से अपशब्द या ऐसा कुछ निकल जाता है और क्रोध आ जाता है।

दादाश्री : उसे तो सेवा कहेंगे ही नहीं न! यदि मदर पर क्रोध आता है तो वह सेवा कहलाएगी ही नहीं। वह तो दुश्मन कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो मुझे यही समझना है कि क्रोध पर कैसे विजय प्राप्त करें।

दादाश्री : माता-पिता को खुश करने से होगा। माता-पिता को खुश रखें, वे लोग खुश रहते हो तो क्रोध पर विजय प्राप्त होगी। क्या माता-पिता तुझ से खुश रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा कुछ करता हूँ, जो उन्हें सही लगता है लेकिन मुझे ठीक नहीं लगता। यदि उसके बावजूद भी मैं करता हूँ तो वे खुश रहते हैं लेकिन उस समय मैं अपनी सोच के विरुद्ध करता हूँ। मुझे नहीं करना है परंतु उन लोगों के संतोष के लिए करता हूँ।

दादाश्री : तो फिर उसे सेवा कहेंगे ही नहीं न! सेवा तो, यदि माता-पिता खुश रहेंगे तो आपको कभी भी असंतोष नहीं होगा। उसके लिए

मैं गारन्टी लिखकर देता हूँ कि यदि माता-पिता खुश रहें तो अशांति होगी ही नहीं।

माता-पिता की सेवा तो उत्तम

प्रश्नकर्ता : मेरे माता-पिता की जो भी इच्छा है उसी अनुसार मैं उन्हें संतोष देने जाता हूँ, उसी अनुसार करता हूँ लेकिन उस समय मैं खुद की इच्छा से नहीं करता। सिर्फ, उनके संतोष के लिए ही करता हूँ लेकिन मुझे भीतर उसका विरोध चलता रहता है उससे खुद में कॉन्फ्लिक्ट (विरोध) होता है। अर्थात् खुद को समाधान नहीं रहता तो ऐसा चाहिए कि वह (समाधान) रहे। ऐसा नहीं है कि सिर्फ माता-पिता के साथ ही होता है, सभी के साथ ऐसा ही होता है।

दादाश्री : उसे लाइफ ही नहीं कहेंगे न? लाइफ ही नहीं है न! यदि आप खुद सीधे हो तो ऐसा क्यों होगा? ऐसा है न, यदि वे आपसे खुश नहीं हैं तभी ऐसा होगा। माता-पिता आपसे खुश नहीं हैं, आप उनके कहे अनुसार नहीं चलते तब फिर वैसा असंतोष रहेगा ही।

प्रश्नकर्ता : माता-पिता हमें जो कहते हैं, वह हमारे लिए ठीक न भी हो।

दादाश्री : माता-पिता जो कहें, वह चाहे कितना भी गलत हो फिर भी हमें उसे सत्य मानना चाहिए। यदि उन्हें खुश रखना है, तो! यदि उन्हें खुश रखोगे, उनकी बात को सत्य मानोगे तो फिर अन्याय होगा ही नहीं। कुदरती रूप से अन्याय नहीं होगा। यदि आपने उसे सत्य मानने का निश्चय किया तो उससे आपका प्रारब्ध चला नहीं जाएगा। यदि आपका प्रारब्ध होगा न तो वह अन्याय नहीं होने देगा। आपके स्वीकार करने से आपका प्रारब्ध चला नहीं जाएगा लेकिन माता-पिता के प्रति अर्पणता होनी चाहिए, समर्पण बुद्धि होनी चाहिए। ऐसा नहीं चलेगा और जैसा माता-पिता कहें, उसी अनुसार करना चाहिए। यदि माता-पिता कहें कि, 'भाई ऐसा नहीं करना है', तो आप मत करना। माता-पिता की सेवा तो उत्तम चीज़ है परंतु इस काल में ऐसा होना मुश्किल है न!

श्रवण अपने माता-पिता की आज्ञा में रहता था। उसके माता-पिता जो भी कहें वही। सिर्फ माता-पिता की सेवा ही करता था। अपने माता-पिता को उठाकर सभी जगह की यात्रा करवाता था। वह कंधों पर उठाकर एक तरफ पिता को बैठाता था और दूसरी तरफ माँ को बैठाता था। उसने कंधे पर बैठाकर सभी जगह की यात्रा करवाई। उसके माता-पिता अंधे थे इसलिए श्रवण उन्हें यात्रा करवाता था।

'माता-पिता की सेवा करो', वह बताने के लिए श्रवण का उदाहरण दिया है। माता-पिता की सेवा करो वह बात तो सच ही है न! इस दुनिया में माता-पिता की सेवा किए बगैर, सब बेकार है। माता-पिता चाहे कैसे भी हों लेकिन उनकी सेवा करनी चाहिए। वह आपका फर्ज़ है।

पुरानी गाड़ी को धकेलकर साथ में ले जाना चाहिए

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा लगता है कि ये बुज़ुर्ग ही क्यों बहुत ज़्यादा गरम हो जाते हैं?

दादाश्री : उनकी गाड़ी तो खटारा (पुरानी) हो चुकी होती है, यदि गाड़ी पुरानी हो जाए तो फिर हमेशा गरम हो जाती है न! नई गाड़ी तो नहीं होती तो बेचारे बुज़ुर्गों का क्या है!

यदि गाड़ी गरम हो जाए तो क्या उसे ठंडी नहीं करनी पड़ेगी? यदि बाहर उसकी किसी के साथ झंझट हो जाए, रास्ते में पुलिस वाले के साथ तो इमोशनल हो जाता है। आप चेहरा देखकर क्या कहते हो? 'जब देखो तब, आपका मुँह तो

हमेशा उतरा हुआ ही रहता है,' ऐसा नहीं कहना चाहिए। आपको समझ जाना चाहिए कि किसी परेशानी में हैं। तब फिर आप गाड़ी को अपने आप ठंडी होने के लिए खड़ी नहीं रखते?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : उसी प्रकार से उन्हें ठंडा करने के लिए थोड़ा चाय नाश्ता वगैरह करवाना तो फिर उनका दिमाग भी ठंडा हो जाएगा। ऐसा सब संभालना पड़ेगा। जबकि ये तो आते ही, 'देखो न! आपका मुँह चढ़ा हुआ है!' 'अरे भाई, वह क्यों चढा़ हुआ है, उसका क्या कारण है, यह तो वे ही समझ सकते हैं बेचारे। ऐसा नहीं होता क्या इस दुनिया में?

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो होता ही है।

दादाश्री : इसीलिए आपको संभाल लेना है। जब गाड़ी गरम हो जाती है तो वहाँ चिढ़ते नहीं हो न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो ये सब भी गाड़ियाँ ही हैं। जो गरम हो जाएँ, वे सभी गाड़ियाँ ही कहलाती हैं। क्योंकि जो मिकेनिकल भाग है न, वही गरम होता है। कॉन्शियस पार्ट (चेतन भाग) में गरम नहीं होता। मिकेनिकल पार्ट (जड़ भाग) में होता है, तो फिर वह गाड़ी कहलाएगी या नहीं?

प्रश्नकर्ता : कहलाएगी।

दादाश्री : कॉन्शियस पार्ट में गरमी नहीं होती। गरमी किस पार्ट में होती है, वह जान लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मेरे फादर तो बहुत गरम हो जाते हैं, यदि खाने का ज़रा सा भी पसंद नहीं आए तो...!

दादाश्री : ऐसा नहीं लेकिन आपको उनकी सेवा करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : बुज़ुर्गों की सेवा करना तो सब से बड़ा धर्म है! जवानों का धर्म क्या है? तब कहते हैं, बुज़ुर्गों की सेवा करना, पुरानी गाड़ी को धकेलकर ले जाना और तभी तो आपके बूढ़े होने पर, आपको भी कोई धकेलने वाले मिल जाएँगे। यह तो देकर लेना है। यदि आप बुज़ुर्गों की सेवा करेंगे तो कोई आपकी सेवा करने वाला भी मिल जाएगा। यदि आप बुज़ुर्गों को हाँकते रहेंगे तो कोई आपको हाँकने वाला मिल जाएगा। जो भी करना हो उसकी छूट है। बुज़ुर्गों की सेवा करने का फल इसी जन्म में मिल जाता है।

माता-पिता का रखना ध्यान

माँ-बाप तो माँ-बाप हैं। इस दुनिया में यदि सब से पहले किसी की सेवा करने योग्य है तो, वह है माँ-बाप की सेवा। उनकी सेवा करेगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सेवा चल ही रही है। घर के कार्यों में मदद करता हूँ।

दादाश्री : लो! वह सब तो अगर नौकर रखा होता तो वह भी कर लेता।

प्रश्नकर्ता : उसमें पैसे खर्च होते हैं न!

दादाश्री : तो क्या वे तेरे लिए पैसे खर्च नहीं करते? तुझे पहनने के लिए कपड़े देते हैं, खाना खिलाते हैं वह सब। उसमें तूने क्या किया? सेवा तो कब कहलाएगी? जब उन्हें दु:ख हो रहा हो, पैर दर्द हो रहे हों, तब आप उनके पैर दबा दो, इस तरह सब...

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो मैं करता हूँ न!

दादाश्री : करता है! ऐसा! बड़ा हो जाएगा तब मम्मी-पापा के लिए क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : सेवा करूँगा।

दादाश्री : किस तरह से सेवा करेगा? तू नौकरी करेगा या सेवा करेगा? यदि बाहर नौकरी करेगा और घर आकर पत्नी की झंझट में पड़ना पड़ेगा तो फिर तू उनकी सेवा कब करेगा? बाहर का डिपार्टमेन्ट बन जाएगा, घर का डिपार्टमेन्ट बन जाएगा। उनका डिपार्टमेन्ट कौन सा रहेगा? तुझे क्या लगता है? शादी किए बिना रह पाएगा?

चूकना नहीं फर्ज़, सेवा का

प्रश्नकर्ता : यदि सेवा करनी है तो शादी नहीं करनी है, वह बात ठीक है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन अगर शादी नहीं करेगा तो कैसे चलेगा? अकेला रह पाएगा? त्यागी की तरह, साधु की तरह रह पाएगा? तेरी इतनी शक्ति है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रह पाऊँगा।

दादाश्री : ऐसा! यह तो शादी के लिए मना कर रहा है। यह शुरू से ही ऐसा कहता है, क्यों? कोई बला नहीं चिपके तो झंझट ही नहीं रहेगी न! इसमें कोई मज़ा नहीं है लेकिन फिर अंत में शादी करनी पड़ती है। बाद में बूढ़ी से शादी करनी पड़ेगी, उसके बजाय जवान से कर ले न! इसलिए बड़े होकर शादी करना। दो-पाँच सात सालों बाद शादी करना और शादी के बाद पत्नी से भी ऐसा कहना कि 'तू भी सेवा कर और मैं भी सेवा करूँगा।' दोनों एक साथ उनकी सेवा करना।

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं। शादी की बात जाने दीजिए। शादी की बात हम एक तरफ रख दें! लेकिन सेवा करनी ही चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, सेवा तो करनी ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : निर्मल प्रेम से, विनय से, परम विनय से उनकी सेवा करनी चाहिए न?

दादाश्री : वह सब तो सौ प्रतिशत।

प्रश्नकर्ता : उनके प्रति प्रेम संपादन करना ही चाहिए।

दादाश्री : हाँ, उसमें हर्ज नहीं। बाकी, सभी फर्ज़ निभाने हैं।

जगत् है प्रेमाधीन

प्रश्नकर्ता : पुराने ज़माने में माता-पिता के पास बच्चों को प्रेम या बहुत लाड़ प्यार करने का टाइम ही नहीं था और वे ऐसा कुछ प्रेम देते भी नहीं थे। बहुत ध्यान नहीं देते थे, जबकि आजकल माता-पिता बच्चों को बहुत प्रेम देते हैं, बहुत प्रेम करते हैं, सब कुछ करते हैं फिर भी बच्चों के मन में माता-पिता के लिए बहुत प्रेम क्यों नहीं है?

दादाश्री : यह प्रेम तो, बाहर का मोह ही इतना जागृत हो गया है न कि उसी में चित्त चला जाता है। पहले मोह बहुत कम था जबकि आजकल तो मोह के स्थल इतने बढ़ गए हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ। माता-पिता भी प्रेम के भूखे रहते हैं कि हमारे बच्चे विनय वगैरह रखें।

दादाश्री : प्रेम ही! जगत् प्रेमाधीन है। मनुष्य को जितनी भौतिक सुख की नहीं पड़ी है, उतनी प्रेम की पड़ी है लेकिन प्रेम टकराता रहता है। क्या करें? प्रेम टकराना नहीं चाहिए।

सेवा अर्थात् राज़ी-खुशी का सौदा

प्रश्नकर्ता : बचपन से ही हमें ऐसा सिखाया गया है कि 'सेवा करोगे तो मेवा मिलेगा'। तो मैं यह जो सेवा करता हूँ, वह मेवा की इच्छा के बिना थोड़े ही करूँगा? मैं तो मनुष्य हूँ। यदि ऐसी इच्छा नहीं होती तो फिर मैं ईश्वर बन जाता।

दादाश्री : यदि तू फल की आशा रखकर सेवा करेगा तो सेवा कच्ची रह जाएगी। यदि फल की आशा नहीं रखेगा तो पक्की सेवा हो पाएगी और फल तो पोस्ट मैन दे जाएगा। यदि आशा रखोगे तो भी पोस्ट मैन दे जाएगा और आशा नहीं रखोगे फिर भी पोस्ट मैन दे जाएगा। सेवा का फल घर बैठे मिलता है। पोस्ट मैन तो जब आएगा तब पता चलेगा लेकिन यों घर बैठे ही!

सेवा क्या है? खुद की राज़ी-खुशी वाले सौदे जबकि नौकरी का मतलब है परवशता। इतना तो करना ही पड़ेगा और सेवा तो हमें जितना अनुकूल आए उतना करेंगे।

माता-पिता खुश तो भगवान खुश

प्रश्नकर्ता : मुझे अपने खुद के लिए भी जीना है और साथ में माता-पिता के लिए भी करना है। दोनों के लिए करना है। यदि मैं सिर्फ माता-पिता के लिए करने जाता हूँ तो फिर मेरा खुद का जीवन, अपनी सोच के अनुसार नहीं जी पाऊँगा।

दादाश्री : जो माता-पिता के लिए करेगा उसका खुद का जीवन तो चलेगा ही, हंड्रेड परसेन्ट चलेगा। यदि उत्तम जीवन जीना हो तो माता-पिता के लिए करते रहो। उसकी मैं गारन्टी देता हूँ।

प्रश्नकर्ता : मैं एक महीने तक इस तरह से करूँगी और देखूँगी कि क्या होता है।

दादाश्री : नहीं! उसके लिए तो उसके पीछे ही पड़ना चाहिए। एक महीने-वहीने... यह कोई बुद्धि का खेल नहीं है। वह तो यदि उसके पीछे पड़ गए तो वहाँ कुदरत को भी बदलना पड़ेगा। 'लॉ तो लॉ है।' माता-पिता को खुश रखने का प्रयत्न किया तो भगवान भी खुश हो जाएँगे। एक महीने के लिए नहीं, मेरा जो होना है वह हो' 'अब मुझे इसी अनुसार करना है, अगर इस तरह तू पीछे पड़ेगी न, तो भगवान भी खुश हो जाएँगे और सभी खुश हो जाएँगे और तुझे सभी सुख प्राप्त होंगे। वर्ना, सुख तो नहीं मिलेगा बल्कि वे दु:खी होंगे। यदि सेवा करेगी तो तेरी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँगी और वे भी सुखी हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् क्या आप ऐसा कहना चाहते हैं कि माता-पिता के लिए परम सेक्रिफाइस करूँगी, परम त्याग करूँगी तभी मेरा उद्धार होगा?

दादाश्री : नहीं! तू सेवा कर। और त्याग किसका करेगी?

प्रश्नकर्ता : परम त्याग अर्थात् सब कुछ त्याग दूँ, सर्वस्व।

दादाश्री : सब कुछ नहीं त्यागना है, कपड़े वगैरह रहने देना। जो कपड़े पहनते हो, वे रहने देना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मैं कपड़ों को महत्व नहीं देता, आपके शब्दों का महत्व है।

दादाश्री : अर्थात् सब कुछ समर्पण कर, मानसिक समर्पण कर। चीज़ों का समर्पण नहीं करना है। चीज़ें भले ही तेरे पास रहें। यदि वे कहें कि 'अब तू शादी कर ले।' तो कहना, 'आप जो लड़का दिखाओगे उसी से शादी करूँगी।' तो वह लड़का इतना अच्छा मिलेगा कि जीवन में तुझे डिवोर्स नहीं लेना पड़ेगा और यदि तू पसंद करेगी तो डिवोर्स लेना पड़ेगा। बस, श्रद्धा, श्रद्धा और श्रद्धा ही। बस एक ही श्रद्धा। श्रद्धा ही सब काम कर देगी। तेरा ध्येय अच्छा है। माता-पिता की सेवा करने का इतना सुंदर ध्येय इस काल में जब जानती ही है तो यदि उस ध्येय को पूरा करेगी तो तेरा काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ माता-पिता ही मेरे लिए उतने इम्पॉरटेन्ट (महत्वपूर्ण) नहीं है, आप भी मेरे पिता ही हो।

दादाश्री : नहीं, वह तो ठीक है लेकिन पहले माता-पिता, उसके बाद बड़े बुज़ुर्ग आते हैं।

पहला नंबर, माता-पिता की सेवा

प्रश्नकर्ता : दादा। मुझे आपकी, ज्ञानी की सेवा करनी है।

दादाश्री : ज्ञानीपुरुष की क्या सेवा करनी है? और वह सेवा उन्हें चाहिए ही कहाँ?

प्रश्नकर्ता : आपको सेवा नहीं चाहिए लेकिन खुद के लिए करनी है।

दादाश्री : नहीं! लेकिन उसका कोई अर्थ ही नहीं है न! वह तो पागलपन है, एक प्रकार की मेडनेस! सेवा तो, उनकी कृपा दृष्टि प्राप्त करने को, सेवा कहते हैं। कृपा प्राप्त करना। वह कृपा कब प्राप्त होती है? जब हमारी आज्ञा में रहोगे तब।

प्रश्नकर्ता : वह मुख्य चीज़ है, दादा।

दादाश्री : हमारी सेवा में नहीं रहना है, आज्ञा में रहना है। सेवा तो माता-पिता की करनी है।

प्रश्नकर्ता : माता-पिता की सेवा करने का लगाव भी नहीं होता और भाव भी नहीं होता।

दादाश्री : वही पागलपन है न! वे पागल कहलाते हैं। माता-पिता की सेवा, जिन माता-पिता का इतना उपकार हैं, उन्हें नहीं समझें और ज्ञानी जिनका इतना उपकार नहीं हैं, उन्हें समझने जाएँ तो वह पागलपन कहलाएगा। अत: पहले माता-पिता की सेवा और दूसरे नंबर पर ज्ञानी की सेवा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन माता-पिता से भी ज्ञानी को ही सर्वस्व माना है।

दादाश्री : नहीं! जो माता-पिता की सेवा नहीं करता, वह इंसान, इंसान ही नहीं कहलाएगा न! वह जानवर कहलाएगा। सब से पहले माता-पिता की सेवा, उसके बाद ज्ञानीपुरुष या गुरु की। फिर, तीसरे नंबर पर भगवान (मूर्ति) की सेवा आती है। भगवान (मूर्ति) का नंबर तीसरा आता है। हाँ, भगवान की (मूर्ति) क्या वह आपके करीब है, रिश्ता है? रिश्ता तो, अपने माता-पिता और गुरु से है, वे हमें समझाते हैं, उनसे रिश्ता है।

अत: माता-पिता की सेवा करनी है। उस जैसी तो कोई चीज़ ही नहीं है। उसके बाद प्रभु की सेवा करना।

प्रश्नकर्ता : माता-पिता की सेवा जैसी अन्य कोई चीज़ नहीं है।

दादाश्री : हाँ, ये तो नक़द हैं। महान उपकारी, नक़द उपकारी। भगवान तो फिर जब उपकार करेंगे, तब देख लेंगे जबकि ये तो अभी नक़द उपकारी हैं। माता-पिता की सेवा करनी हो तो करना, उन्हें दु:खी मत करना हाँ... यों लकड़ी से पीट कर दु:खी करते हैं न!

सब से पहले माँ-बाप। भगवान तो बाद में, बल्कि भगवान तो खुश होंगे। अगर तू माता-पिता की सेवा करेगा न तो भगवान खुश होंगे। देखो, तीन काम होते हैं न! एक काम तो यह हुआ कि माता-पिता की सेवा की तो उससे भगवान खुश होते हैं और भगवान खुश हो जाएँ तो तेरा कल्याण हो जाएगा! माता-पिता की सेवा करने से भगवान खुश होंगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होंगे।

बड़ों के साथ रखना, बालक जैसी बुद्धि

दादाश्री : इस दुनिया में यदि खास तौर पर कुछ करने जैसा है और यदि लोगों को कुछ

सिखाना है तो सब से पहले माता-पिता की सेवा। चाहे वे कैसे भी हों फिर भी तू उनकी सेवा करना और तेरे माता-पिता को बुद्धि से मत देखना। बुद्धि से देखने पर तो वे पागल ही दिखाई देंगे, नहीं?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : वह जनरेशन कैसी? और यह जनरेशन कैसी? तो बुद्धि से मत देखना। यदि माता-पिता की सेवा करे और संसार में आपको किसी ने अच्छे रास्ते पर आगे बढ़ाया हो, उनकी सेवा करे तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : बड़ों के साथ कैसी बुद्धि रखनी है? वहाँ भी तीक्ष्ण बुद्धि रखनी है?

दादाश्री : बड़ों के साथ बालक जैसी बुद्धि रखनी है।

प्रश्नकर्ता : उनके सभी पुराने विचार पक्के हो चुके होते हैं!

दादाश्री : नहीं, ऐसे सभी जो हो गए हैं, उनके साथ बालक जैसी बुद्धि रखेंगे तो आपकी बुद्धि से उन्हें दुःख नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, बुज़ुर्ग भी हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं, वे अपने पुराने विचारों से बंधे रहते हैं तो हमें उन्हें किस तरह से हैन्डल करना चाहिए? कैसी बुद्धि से?

दादाश्री : अगर ऐसे समय पर, जब जल्दी हो और गाड़ी पंचर हो जाए तो क्या व्हील को मारेंगे? वहाँ तो जल्दी से सब संभालकर काम कर लेते हैं। गाड़ी तो बेचारी, उसमें पंचर हो ही जाता है। इसी प्रकार बूढ़े में भी पंचर हो ही जाता है, हमें उन्हें संभाल लेना है। गाड़ी को मारेंगे क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

सेवा से होती है, चित्तशुद्धि

दादाश्री : माता-पिता की सेवा से बहुत चित्तशुद्धि होती है।

प्रश्नकर्ता : माता-पिता की सेवा करने से चित्त कैसे शुद्ध होता है?

दादाश्री : यहाँ हम चित्तशुद्धि करते हैं। अपना यह ज्ञान चित्तशुद्धि का साधन है। अन्य लोगों (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है) से यह नहीं हो पाएगा। तब फिर उन्हें माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। माता-पिता और गुरु की सेवा करने से चित्तशुद्धि होती है। जिन्होंने यह ज्ञान नहीं लिया है, उन लोगों को यह उपाय करना चाहिए।

जितनी हो सके उतनी मदद करनी है

प्रश्नकर्ता : हमारे माता-पिता इन्डिया में हों और हम यहाँ परदेश में हों, इन्डिया में माता-पिता की स्थिति अच्छी है। हम दो-पाँच साल में माता-पिता से मिलते हैं, इसके अलावा कुछ नहीं कर सकते तो मन में ऐसा होता है कि हमें माता-पिता के प्रति कैसा फर्ज़ निभाना चाहिए?

दादाश्री : उन्हें जो-जो अच्छा लगता है, आपको वह सब भेजना चाहिए। उनकी क्या-क्या चॉइस (पसंद) हैं, वे सब चीज़ें उन्हें भेजते रहना चाहिए क्योंकि वे पैसे वाले हैं तो पैसे की इच्छा नहीं रखेंगे। इसलिए उनकी चॉइस की चीज़ें भेज देनी चाहिए।

विनय-विवेक नहीं तोड़ना, कभी भी

प्रश्नकर्ता : यह सब समझ में आता है इसके बावजूद भी माता-पिता के प्रति जो विनय-विवेक रखना चाहिए, वह बिल्कुल भी नहीं है।

दादाश्री : नहीं। वैसा नहीं होना चाहिए।

वह गलत है। वह हंड्रेड परसेन्ट गलत है। नहीं चलेगा। उच्च विनय वाला व्यवहार होना चाहिए। माता-पिता का उपकार कैसे भूल सकते हैं? उनका उपकार नहीं भूल सकते।

प्रश्नकर्ता : कई बार तो वे ऐसे शब्द कह देते हैं न कि तो मुझे बहुत आघात लग जाता है। फिर दिनभर मुझे घबराहट होती है और ऐसा सब होता रहता है।

दादाश्री : नहीं। उसे याद मत रखना, मदर जो कुछ भी कहती हैं, वह तो रिकॉर्ड बोलती है! उसे ज्ञानपूर्वक नोट करना चाहिए। उनका विनय नहीं रखोगे तो ऐसा यहाँ नहीं चलेगा। यदि वे मार डालें तो मर जाना चाहिए लेकिन माता-पिता के प्रति विनय व विवेक नहीं तोड़ सकते।

प्रश्नकर्ता : मैं एक्सेप्ट (स्वीकार) करता हूँ कि बेटे के तौर पर मेरा विनय व विवेक ठीक नहीं है लेकिन संयोग ऐसे आ जाते हैं कि मुँह से निकल जाता है, मेरी इच्छा नहीं रहती फिर भी निकल जाता है। उसके लिए प्रतिक्रमण भी करता हूँ लेकिन कभी-कभी ऐसा निकल जाता है।

दादाश्री : वह तो तुरंत माफी माँग लेनी चाहिए। निकल जाता है लेकिन अपना 'ज्ञान' उस समय हाज़िर हो जाता है। यदि भूल हुई तो तुरंत ही माफी माँग लेनी चाहिए कि 'मुझ से ऐसा निकल गया, वह मेरी भूल है।' मम्मी से कहना कि, 'मैं फिर से ऐसी भूल नहीं करूँगा।' इससे तो मुझे खराब लगता है कि हमारा ऐसे कैसे संस्कार होंगे? हमें ऐसा लगता है कि जब बाहर वालों को ही दुःख नहीं देना है तो फिर ये घर वाले....।

प्रश्नकर्ता : जो दादा के आज्ञाकारी हैं उनके घर का वातावरण तो एकदम प्रफुल्लित ही होना चाहिए लेकिन यह तो कहता है, कि 'इसके दिमाग़ पर हमेशा बोझ ही रहता है।'

दादाश्री : वह तो अभी विनय धर्म की बात कर रहा है। तुझे कैसा विनय धर्म रखना है। तू क्या कहता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, विनय रहना ही चाहिए।

दादाश्री : बाहर भी रहना चाहिए तो घर में कैसा रहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : आदर्श होना चाहिए।

दादाश्री : तेरे ऐसे शब्द निकल जाते हैं, उसी बात पर कह रहे हैं लेकिन यदि उसके साथ ही जागृति और अपना ज्ञान हाज़िर रहेगा और तुरंत माफी माँग लेगा तो उन्हें दुःख नहीं होगा।

उपकारी का उपकार कभी मत भूलना

यदि लोग माता-पिता का उपकार मानेंगे न, कि माता-पिता ने हमें जन्म दिया है और यह जन्म मोक्ष के लिए है तो उनका यह उपकार कभी नहीं भूलेंगे! माता-पिता का उपकार भूलने से तो उनका विरोध हो जाता है। वे चाहे कुछ भी कहें लेकिन वे हमारे उपकारी हैं। अतः वह सब 'लेट गो' (छोड़ देना) करना होगा। यदि ऐसा समझ में आ जाएगा तो हल निकल आएगा, वर्ना इसका हल ही नहीं आएगा, ऐसा है। मैं अपना अस्तित्व ज़ाहिर किया करूँ, उसका अर्थ ही नहीं है। माता-पिता बच्चों को बड़ा करते हैं, वह भले ही उनका फर्ज़ है और व्यवहार में ऐसा भी दिखाई देता है कि आपके पुण्य की वजह से है लेकिन फिर भी वे उपकारी हैं। अतः उपकारी का उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए। उनके प्रति ज़रा भी भाव नहीं बिगड़ने चाहिए और यदि बिगड़ जाएँ तो पश्चाताप करते रहना चाहिए।

जो व्यक्ति माता-पिता के दोष देखता है, उसमें कभी भी बरकत नहीं आती। भले ही वह

अमीर बन जाए लेकिन उसकी आध्यात्मिक उन्नति कभी भी नहीं होगी। माता-पिता के दोष देखने ही नहीं चाहिए। उनके उपकार कैसे भूल सकते हैं? यदि किसी ने हमें एक कप चाय पिलाई हो तो उनका भी उपकार नहीं भूलना चाहिए, तब फिर अपने माता-पिता का उपकार कैसे भूल सकते हैं?

तू समझ गया? फादर-मदर की बहुत सेवा करनी चाहिए। वे अगर कुछ उल्टा बोलें तो हमें क्या करना है? इग्नोर करना है क्योंकि वे बड़े हैं न! या तुझे उल्टा बोलना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं बोलना चाहिए लेकिन बोल लेती हूँ, उसका क्या? मिस्टेक (भूल) हो जाए तब क्या करूँ?

दादाश्री : हाँ, क्यों नहीं फिसल पड़ते? वहाँ पर तो मज़बूत रहता है। यदि ऐसे स्लिप हो जाओगे तो फादर भी समझ जाएँगे कि यह बेचारा फिसल पड़ा। तू जानबूझ कर ऐसा करने जाता है तो मैं इसका जवाब चाहता हूँ कि, 'तू यहाँ कैसे फिसल पड़ा?' सही है या गलत? इसलिए एज़ फार एज़ पॉसिबल (संभव हो तब तक) आप से ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके बावजूद भी अगर तुझ से तेरी शक्ति से बाहर हो जाए तो वे सभी समझ जाएँगे कि 'यह ऐसा नहीं कर सकता'।

उन्हें खुश रखना चाहिए। वे तुझे खुश रखते हैं या नहीं? तेरी इच्छा उन्हें खुश रखने की है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। कई बार मुझे ऐसा होता है कि मेरी कोई भूल नहीं है। कभी-कभी मुझे अपनी भूल का पता चलता है और कई बार ऐसा लगता है कि मेरी कोई भूल नहीं है, उन्हीं की गलती है।

दादाश्री : तुझे ऐसा लगता है लेकिन फिर प्रतिक्रमण करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ! फिर जब उन्हें भी ज़रा ज़्यादा *कढ़ापा*(क्लेश)-*अजंपा*(बैचेनी) हो जाता है, तब ऐसा लगता है कि अब मेरी वजह से ऐसा नहीं होना चाहिए।

दादाश्री : नहीं! लेकिन ऐसा नहीं है। तूने जो गलत शब्द कहे, उसके लिए 'मेरी भूल हो गई है', ऐसे करके प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : कई बार मुझे अपनी खुद की भूल है ऐसा नहीं लगता। मुझे ऐसा ही लगता है कि उनकी ही भूल है।

दादाश्री : भूल के बिना किसी को दुःख होता ही नहीं और तेरी भूल है इसीलिए किसी और को दुःख होता है।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो ऐसा ही लगता रहता है कि उनकी प्रकृति ही ऐसी है।

दादाश्री : ये सभी लोग कहते हैं कि उनकी प्रकृति अच्छी है। सिर्फ तू ही 'खराब' कहती है अर्थात् तेरे साथ उनका ऐसा ऋणानुबंध है, हिसाब है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ऐसा लगता है कि उन्हें तो किचकिच करने की आदत ही पड़ गई है।

दादाश्री : हाँ तो इसलिए इसमें तेरी ही भूल है, भूल तेरी है। अर्थात् माता-पिता को दुःख क्यों हुआ, उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। दुःख तो होना ही नहीं चाहिए। मन में ऐसा रहना चाहिए कि 'सुख देने आई हूँ। मेरी ऐसी कौन सी भूल हो गई जिससे माता-पिता को दुःख हुआ?'

तय की हुई बातों में सिन्सियर रहना

प्रश्नकर्ता : बुज़ुर्ग माता-पिता हो, बड़ी उम्र

वाले बुज़ुर्ग हो, एक तरफ माता-पिता है और दूसरी तरफ वाइफ (पत्नी) है तो उन दोनों के बीच, पहले किसकी बात सुननी चाहिए?

दादाश्री : तय की हुई बातों में सिन्सियर रहना चाहिए कि 'मुझे माता-पिता की सेवा करनी है।' फिर उसमें और कुछ नहीं। फिर उसमें क्या हर्ज है? तब कहते हैं, शादी के बाद वे जो गुरु (पत्नी) आते हैं न, वे गुरु कहते हैं कि, 'माँ का स्वभाव बहुत अजीब है।' फिर भी वह नहीं सुनता। माँ का भक्त है न, सिन्सियर तो है ही न! वह नहीं सुनता। ऐसा कहता है कि 'मेरी माँ ऐसी नहीं है, तुझे ऐसा नहीं कहना है।' तब फिर वह कुछ कला करती है कि अभी तो यह टाइट है लेकिन धीरे-धीरे... और फिर धीरे से उसके मन में घुसा ही देती है, फिर वही खुद कहने लगता है कि 'माँ का स्वभाव पक्षपाती है।' देखो, सिन्सियरपना चूक गया न! और जिसे सिन्सियर रहना है उसे किसी की बातों में नहीं आना चाहिए। हम कभी भी किसी की बातों में नहीं आए। कभी भी नहीं। आप कहकर जाओ फिर भी हम उसे सही नहीं मानते। हम उसका सब देख लेते हैं। हम पता लगाते हैं। हमारा नियम ऐसा नहीं है कि किसी का एक तरफा मान लें। अगर हीरा बा कहें कि, 'माँ ने ऐसा किया था...' तो, नहीं, ऐसा नहीं। और अगर उनकी बात सही हो, बा ने हीरा बा को दु:ख दिया भी हो, फिर भी हम सिन्सियर ही रहेंगे।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा हुआ कि किसी ने एक ही ध्येय तय किया हो, खुद को जो सही लगा हो और जो ध्येय तय किया, उसी ध्येय को पकड़े रखना चाहिए?

दादाश्री : नहीं! फिर वह ध्येय कैसा होना चाहिए? वह ध्येय तो ऐसा होना चाहिए जिसे सौ लोग 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करें। ज़्यादातर लोग माता-पिता की सेवा करने में सहमत होंगे या मना करेंगे?

प्रश्नकर्ता : सभी सहमत होंगे।

दादाश्री : ऐसा ध्येय! अगर ऐसा ध्येय तय करें कि 'पत्नी को रोज़ मारना है' तो क्या यह भी कोई ध्येय है?

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि, 'माता-पिता की सेवा करना, वही ध्येय होना चाहिए।' लेकिन कोई अगर ऐसा ध्येय लेकर बैठ जाए कि माता-पिता की सेवा करनी ही नहीं है?

दादाश्री : अगर उस ध्येय को पकड़े रहे तो भी अच्छा है लेकिन अगर ऐसा ध्येय तय करने के बाद फिर यदि वह सेवा करेगा तो वह गुनाह है। किसी भी ध्येय को पकड़े रखो न तो अच्छा है लेकिन यदि ढुलमुल रखोगे तो फिर वह खीर में नमक डालकर कढ़ी बनाने जैसा हो जाएगा न!

हिन्दुस्तान के लोग माता-पिता की सेवा के अलावा तो और कोई कार्य ही नहीं करते। आजकल तो वह सेवा भी खत्म हो गई इसलिए फिर बुज़ुर्गों के लिए वृद्धाश्रम बनाने पड़े। यह सब, हिन्दुस्तान को शोभा नहीं देता न!

वास्तव में ज़रूरत है, बुज़ुर्गों को सेवा की

आजकल तो यदि सब से ज़्यादा कोई दु:खी है न, तो वे हैं साठ-पैसठ साल के बुज़ुर्ग। बहुत दु:खी हैं लेकिन वे कहें किससे? बच्चे तो सुनते नहीं। अंतर बहुत बढ़ गया है, पुराने ज़माने में और नए ज़माने में। बुज़ुर्ग पुराना ज़माना नहीं छोड़ता। मार खाता है फिर भी नहीं छोड़ता।

प्रश्नकर्ता : हर पैंसठ साल वाले की ऐसी ही हालत होती है न!

दादाश्री : हाँ, ऐसी ही हालत! यही हालत! तो सचमुच इस ज़माने में करने लायक क्या है? किसी जगह पर ऐसे बुज़ुर्गों के रहने के लिए कोई स्थान हो तो बहुत अच्छा इसलिए हम ने सोचा था। 'मैंने कहा था, ऐसा कुछ करना हो तो सब से पहले उन्हें यह ज्ञान दे देना है। उनके रहने-खाने की व्यवस्था तो अपने यहाँ की पब्लिक को, दूसरी सामाजिक संस्था को सौंप देंगे तो चलेगा लेकिन यदि ज्ञान दिया हो तो दर्शन करते रहेंगे तब भी काम तो चलेगा और यदि यह 'ज्ञान' दिया हो तो उन बेचारों को शांति रहेगी। वर्ना, शांति किस आधार पर रहेगी? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है।

दादाश्री : अच्छी लगे ऐसी बात है या नहीं?

घर में कोई साठ-पैसठ साल का व्यक्ति रह रहा हो न, तो कोई उसकी नहीं सुनता। तब फिर क्या होता है? कुछ कह तो नहीं सकते और भीतर में उल्टे कर्म बाँधते हैं। अत: इन लोगों ने वृद्धाश्रम की जो व्यवस्था की है, वह व्यवस्था गलत नहीं है। वह हेल्पिंग है लेकिन उसे वृद्धाश्रम के रूप में नहीं लेकिन कोई सम्मानजनक शब्द देना चाहिए जिससे कि उन्हें मान-सम्मान महसूस हो।

प्रश्नकर्ता : फॉरेन में भी जो बुज़ुर्ग हैं, वे प्रेम के भूखे हैं इसीलिए परेशानी है।

दादाश्री : वहाँ तो अठारह साल की उम्र से बच्चे अलग रहने लगते हैं। अठारह साल का बेटा अलग हो जाता है फिर मिलने भी नहीं आता न! फोन पर बात करता है, उनमें ऐसा प्रेम ही नहीं है जबकि अपने यहाँ तो अंत तक।

प्रश्नकर्ता : यहाँ तो अच्छा है।

दादाश्री : यहाँ तो बहुत अच्छा है लेकिन यहाँ भी अब बिगड़ने लगा है। सभी लोगों के लिए नहीं बिगड़ा है लेकिन कुछ परसेन्ट ऐसे हैं, जो पिछला अभी भी नहीं छोड़ते हैं इसीलिए मुझे कहना पड़ता है न, 'एडजस्ट एवरीव्हेर।' हाँ, एडजस्टमेन्ट नहीं लोगे तो मार खाकर मर जाओगे। यह ज़माना बहुत ही अलग प्रकार का आ रहा है।

जो दुनिया में नहीं होता, ऐसा हुआ है

अब, आपके घर पर बच्चों में अभी कैसे संस्कार आएँगे? आप इतने सालों बाद भी, बाल पक गए फिर भी अपने माता-पिता को नमस्कार करते हों तो बच्चों के मन में विचार आएगा या नहीं कि पिता जी तो ऐसा लाभ उठा रहे हैं तो मैं क्यों न उठाँऊ? तो वे आपके पैर छूते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : छूते हैं।

दादाश्री : जबकि पहले तो आप खुद ही अपने माता-पिता के चरण स्पर्श नहीं करते थे और साथ में खुद ही अपनी इज्ज़त खो रहे थे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : अपनी ही खो रहे थे।

दादाश्री : तो कौन सा अच्छा है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा नहीं करोगे तो अंत में आपको क्या मिलेगा? खुद की ही कब्र खोदी है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह तो घर की ही बात है कि घर में माँ-बाप के चरण स्पर्श करते हैं जबकि अपने कोई बड़े बुज़ुर्ग आएँ और हम उन्हें नमस्कार करें तो उससे लाभ होता है या नहीं?

दादाश्री : बहुत अच्छा! बहुत लाभ होता है! इसका मतलब विनय सब से बड़ी चीज़ है।

'अक्रम ज्ञान' लेने के बाद सभी के घर में ऐसा ही हो गया है।

एक भाई ने पढ़ाई तो बहुत की थी और साथ ही बहुत सी पुस्तकें भी पढ़ी थीं और फिर वह लेखक था। उसके पिता भी ग्रेज्युएट थे लेकिन वह भाई अपने पिता के बारे में क्या समझता था कि इनमें अक्ल नहीं है। रोज़ उन दोनों की किचकिच, टिक-टिक होती रहती थी। दोनों के अहंकार लड़ते थे। पिता अपना अहंकार नहीं छोड़ते थे और इनका अहंकार पक्का हो गया था। इसका अहंकार बहुत जम चुका था।

फिर इन भाई ने हम से ज्ञान लिया। हम बुलवाते हैं न, 'नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं' तो सभी लोग बोलते थे लेकिन ये भाई नहीं बोलते थे फिर मैंने सभी के सामने पूछा, 'आप नहीं बोलते हैं तो क्या आप खुद नहीं बोलते या कोई बोलने नहीं देता?' तब कहने लगे, 'बोलने से क्या फायदा?' तब मैंने कहा, 'मैं क्यों बोलता हूँ, मुझे बोलने की ज़रूरत नहीं है। मैं तो सब कुछ प्राप्त करके बैठा हूँ। आपको सिखाता हूँ ऐसा बोलो। यह विज्ञान है, यह साइन्स है।' एक-एक शब्द साइन्स रूपी हैं। फिर तो उसे अच्छी तरह से समझ में आ गया और फिर बोलने लगा।

अब उसका अपने फादर-मदर के साथ क्या होता था?' पिता के साथ रोज़ टक्कर होती रहती थी तो एक दिन उसके पिता ने मुझे बताया कि 'इसने ज्ञान लिया है लेकिन घर में बेहिसाब झगड़ा करता है!' तब फिर मैंने भाई से क्या कहा, 'आप हमारी एक आज्ञा का पालन करो।' तब वे कहने लगे, 'हाँ दादाजी, आप जो भी कहेंगे, वह।' 'आज से आप अपने पिता को रोज़ सुबह साष्टांग दंडवत् प्रणाम करना उसके बाद दिनभर के काम करना।' उसने शुरू कर दिया फिर उसके पिता आकर मुझ कहने लगे, 'अब तो मेरा घर स्वर्ग बन गया है। नरक जैसा बन गया था उसमें से स्वर्ग बन गया।' अब, उन भाई को क्या फायदा हुआ वह आप जानते हो? उनके पंद्रह और बारह साल के बच्चे थे, वे सभी उनके पैर छूने लगे। तब उन्होंने कहा, 'पैर क्यों छू रहे हो? तो वे कहने लगे 'आप अपने फादर के पैर क्यों छूते हैं। आप लाभ उठाते हैं तो क्या हम नहीं उठाएँगे?' अधिकतर घरों में ऐसा शुरू हो गया है। घर वालों के साथ इस तरह बात सुलटाने से साभ होता है। बाहर वालों के साथ इस तरह नहीं करना है वर्ना वे और भी अकड़ जाएँगे। जबकि यहाँ तो अपने बड़े बुज़ुर्ग हैं न, बड़े बुज़ुर्ग तो उपकारी हैं! उनके आशीर्वाद रहते ही हैं! अब वे पचास साल के, सुबह दर्शन करते थे। दंडवत् प्रणाम शुरू कर दिया। आज्ञापालन करने में भी शूरवीर! वे कहते हैं, 'ठीक है दादाजी, आप जो भी कहेंगे वह मुझे स्वीकार है।' उसे अपने पिता के सामने शर्म भी नहीं आई और सीधा वहाँ जाकर पिता के चरण छूए। तब उसके पिता हिल गए कि यह क्या हो गया? जो दुनिया में नहीं होता है वैसा हो गया!

नए सिरे से चलने से, अच्छा रहता है

इस दुनिया में सब से प्रथम सेवा करने योग्य कोई हो तो वे हैं माँ-बाप। माता-पिता की सेवा करने से शांति नहीं जाती। आजकल सच्चे दिल से माता-पिता की सेवा नहीं करते। तीस साल का हुआ और 'गुरु' (पत्नी) आ जाए तो कहेगी कि 'मुझे नए घर में ले जाओ।' आपने गुरु देखे हैं? पच्चीस-तीस साल में 'गुरु' मिल जाते हैं और 'गुरु' मिलने के बाद वह बदल जाता है।

जो शुद्ध मन से माता-पिता की सेवा करता है, उसे अशांति नहीं होती ऐसा है यह संसार। यह संसार बेकार नहीं है। लोग पूछते हैं न कि बच्चों

का ही दोष हैं न। बच्चे ही माता-पिता की सेवा नहीं करते हैं, उसमें माता-पिता का क्या दोष ? मैंने कहा कि उन्होंने अपने माता-पिता की सेवा नहीं की इसलिए उन्हें सेवा नहीं मिलती। अत: उनकी दी हुई यह विरासत ही गलत है। अब नए सिरे से चलेंगे तो अच्छा रहेगा।

मैं हर एक घर में ऐसा करवाता हूँ। सभी बच्चे ऑलराइट हो गए हैं। माता-पिता भी ऑलराइट और बच्चे भी ऑलराइट!

बुज़ुर्गों की सेवा करने से आपमें यह विज्ञान विकसित होता है। क्या मूर्तियों की सेवा हो सकती है ? क्या मूर्तियों के पैर में दर्द होता है ? सेवा तो अपने बड़े, बुज़ुर्गों, सास-ससुर, माता-पिता या गुरु हों तो गुरु, इन सभी की सेवा करना हमारा फर्ज़ है।

माता-पिता की सेवा में ग़ज़ब का सुख

माता-पिता को सुख देने से हमें सुख प्राप्त होता है। जो माता-पिता की सेवा करता है, वह कभी भी दु:खी नहीं होता। माता-पिता की सेवा करने वाले कभी दु:खी नहीं होते हैं। इस काल में तो माता-पिता की सेवा नहीं होती इसीलिए ये सब दु:ख हैं।

भगवान क्या कहते हैं ? यदि ''तुझे मोक्ष चाहिए तो 'ज्ञानीपुरुष' के पास जा और सांसारिक सुख चाहिए तो माता-पिता और गुरु की सेवा करना।'' माता-पिता की सेवा से तो ग़ज़ब का सुख प्राप्त होता है!

चुकाएँ माता-पिता के अपार ऋण

अपना विज्ञान ऐसा है कि पहले हुई भूलों का हिसाब चुकता कर दे और नई भूल नहीं होने दे। यह मार्ग साधु बनाने का नहीं है, यह तो ऋणानुबंध चुकाने का मार्ग है। ऋणानुबंध चुकाए बिना भाग कर साधु बन जाओगे तो उससे कुछ नहीं होगा। अर्थात् ऋणानुबंध चुका देने हैं। जिसकी गाली खानी हो उसकी गाली खा लेना, जिसकी मार खानी हो उसकी मार खा लेना, जिसकी सेवा करनी हो उसकी सेवा करना लेकिन हिसाब सारे चुकाने पड़ेंगे। जितना हिसाब में लिखकर लाए हो, उसे तो क्लियर करना ही पड़ेगा न ?

माता-पिता की सेवा करना ही धर्म है। हिसाब चाहे कैसा भी हो लेकिन सेवा करना अपना धर्म है और आप धर्म का जितना पालन करोगे उतना ही आपको सुख प्राप्त होगा। बड़े बुज़ुर्गों की सेवा तो होती है और साथ में हमें सुख भी प्राप्त होता है।

माता-पिता की सेवा करने से सर्वोत्तम पुण्य बंधता है और उससे आपका ही अच्छा होता है और क्या सेवा करनी है ? किसलिए करनी है ? तो 'जिन्होंने हमें जन्म दिया, छोटे से बड़ा किया, उनका उपकार है, उस उपकार के बदले में उनका अपार बदला चुकाना है। ऐसा करना है। और क्या करना है ? यों तो रास्ते चलते कोई व्यक्ति हम पर उपकार करे, तब भी हम नहीं भूलते तो फिर इनके उपकार को तो भूल ही नहीं सकते। इसलिए हमें उनकी सेवा करनी चाहिए। उनका मन खुश रखना चाहिए। उनके मन को दु:खी नहीं करना चाहिए। माता-पिता और गुरु, इन तीनों की सेवा करने योग्य है।

इस दुनिया में इन तीनों का महान उपकार है। उस उपकार को भूलना ही नहीं है। फादर, मदर और गुर का! जिन्होंने, हमें जीवन में आगे बढ़ाया है इन तीनों का उपकार कभी नहीं भूल सकते।

जय सच्चिदानंद।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

20-22 फरवरी : दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य के बेलगाँव शहर में, पहली बार पूज्यश्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। लगभग 200 महात्माओं ने पूज्यश्री का स्वागत किया और कर्नाटक के मशहूर नृत्य द्वारा पूज्यश्री का अभिवादन किया। पूज्यश्री ने कई विषयों के प्रश्नों के समाधान दिए और कुछ महात्माओं ने ज्ञान प्राप्ति के बाद हुए अनुभवों के वर्णन किए। दिनांक 21 को मोर्निंग वॉक के दौरान महात्माओं ने पूज्यश्री की उपस्थिति में फैमिली मेम्बरर्स के प्रतिक्रमण किए। जैसे लगा कि मोर्निंग वॉक हार्टिली संवत्सरी प्रतिक्रमण के रूप में परिणामित हो गया। ज्ञानविधि में 855 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग के दौरान महात्माओं द्वारा उनके सेवा और आयोजन के अनुभव के वर्णन किए गए। आप्तपुत्र फॉलोअप सत्संग में ज्ञान लिए हुए नए महात्मा पाँच आज्ञा को विशेषरूप से समझने का लाभ उठाया।

3-5 मार्च : अहमदाबाद के बोडकदेव क्षेत्र में सत्संग और ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। लगभग 900 महात्माओं ने उत्साहपूर्वक पूज्यश्री का स्वागत किया। प्रारंभ में पूज्यश्री ने 'सेवा-परोपकार-मानव धर्म' टॉपिक पर सत्संग किए और बाद में कई विषयों पर लोगों के प्रश्नों का समाधानपूर्वक उत्तर दिए। कुछ पुराने महात्माओं ने ज्ञान के बाद के अनुभव बताए। हाल में अहमदाबद को 'वर्ल्ड हेरिटेज सिटी' का दर्ज दिया गया और स्टेज को उसी थीम पर सजाया गया। पूज्यश्री के 'ज्ञान दिवस' पर पूज्यश्री ने केक काटा और GNC के बच्चों ने पूज्यश्री के साथ फोटो खिचवाया। ज्ञानविधि में 900 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में पूज्यश्री के दर्शन व सत्संग का 800 महात्माओं ने लाभ उठाया। दिनांक 5 के इन्फोर्मल सत्संग में पूज्य की उपस्थिति में महात्माओं ने फैमिली मेम्बरर्स के प्रतिक्रमण किए। आप्तपुत्र फॉलोअप सत्संग में 250 से भी ज़्यादा नए महत्मा आए थे।

6 मार्च : पूज्यश्री ने अपने 48वे ज्ञानदिवस पर अडालज त्रिमंदिर संकुल के जॉयजेन्टिक हॉल में आकर महात्माओं से आशीर्वाद लिए और जगत् कल्याण का कार्य 'कषाय-विषय रहित, प्योरिटी' में रहकर कर सके ऐसी शक्तियाँ माँगी। रात को ब्लिस गार्डन में पूज्यश्री का सत्संग आयोजित हुआ जहाँ पर महात्माओं ने पूज्यश्री से उनके जीवन व ज्ञानदशा के बारे में प्रश्न पूछे। YMHT द्वारा जॉयजेन्टिक हॉल में विशेष प्रदर्शन रखा गया।

8-11 मार्च : इस बार ब्रह्मचर्य की शिविर का आयोजन लींच गाँव में अपने ही संकुल में हुआ। पहले दो दिन आप्तसंकुल के साधक भाईयों के लिए शिविर का आयोजन हुआ जिसमें पूज्यश्री के स्पेशल टॉपिक सेशन के अलावा ड्रामा, थ्री विज़न प्रेज़ेन्टेशन व एक्टिविटी सेशन भी हुए। बाद दो दिन 300 ब्रह्मचारी साधक भाइयों ने भी हिस्सा लिया। GD, ब्रह्मचर्य पुस्कत पर पारायण व पूज्यश्री के स्पेशल टॉपिक पर सत्संग हुए। रात के सेशन में गरबा और *राजीपो* व प्योरिटी पर एक्टिविटी के अलावा पूज्यश्री के साथ फोटो सेशन भी हुए। साधकों ने पूज्यश्री के साथ डिनर, प्रक्षाल-पूजन-आरती व सामायिक का आनंद प्राप्त किया। आखिरी सेशन में कुछ साधकों ने स्थूल विषय के दोषों से बचने के अभियान टारगेट ज़ीरो के सुंदर अनुभव कुछ साधकों ने बताए जो सभी के लिए प्रेरणादाई थे।

12-15 मार्च : लींच गाँव के संकुल में बहनों के लिए भी उसी प्रकार ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ जिसमें पहले दो दिन आप्तसंकुल साधक बहनें और बाद दो दिन में 300 बह्मचारी बहनों ने भी हिस्सा लिया। शिविर में ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण, स्पेशल टॉपिक पर पूज्यश्री के सत्संग, GD, प्रक्षाल-आरती-विधि, एक्टिविटी, गरबा जैसे कार्यक्रम आयोजित हुए।

पूज्यश्री ने वेलकम सेशन में बह्मचर्य रूपी चंदन के पौधे को पानी पिलाया जिसे यादगार के तौर पर आप्तपुत्री बहनों द्वारा लींच संकुल के गार्डन में लगाया गया। लींच के रमणीय वातावरण और भगवान की प्रत्यक्ष उपस्थिति में शिविरार्थियों ने बहुत स्थिरता का अनुभव किया।

17-18 मार्च : अडालज संकुल में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि में पूज्यश्री के सत्संग दौरान गुजरात व समग्र भारत के विविध राज्यों से आए हुए मुमुक्षु-महात्माओं द्वारा कई प्रश्न पूछे गए। रविवार सुबह मुमुक्षुओं के लिए ज्ञानविधि की पूर्वभूमिका के तौर पर आप्तपुत्र सत्संग आयोजित हुआ। 1500 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की जिसमें 100 हिन्दीभाषी मुमुक्षु भी थे। पूज्यश्री ने नेगेटिव 'बुद्धि' टॉपिक पर स्पेशल कलेक्शन की डीवीडी व बालविज्ञान निर्मित टेल ऑफ ओरिंग्स पार्ट-2 पुस्तक का विमोचन भी किया।

19 मार्च : पूज्य नीरू माँ की बारहवीं पुन्यतिथि अडालज के त्रिमंदिर संकुल में आनंद व उल्लास से मनाई गई

दादावाणी

जहाँ पर दस हज़ार महात्माओं ने हिस्सा लिया। सुबह 6-30 बजे ATPL सेक्टर 4A से प्रभातफेरी शुरू हुई। बाद में सभी महात्माओं द्वारा पूज्य नीरू माँ की समाधि पर सामूहिक प्रार्थना व विधि हुई। पूज्यश्री ने समाधि पधारकर पूज्य नीरू माँ के जीवन की प्रेरणादाई बातें बताई। पूज्यश्री द्वारा पिछले दो सालों में पूज्य नीरू माँ की पून्यतिथि पर बनाई गई स्पेशल डीवीडी का विमोचन हुआ। पूज्यश्री ने समाधि पर दर्शन करके, पुष्पांजलि अर्पित की और सीमंधर स्वामी और दादा की आरती हुई। YMHT द्वारा सभी महात्माओं को पूज्य नीरू माँ के कथन की चिट्ठी भेट अर्पण की गई। आप्तसंकुल के प्रत्येक भाई-बहनों को नीरू माँ के फोटो के विविध टुकड़े दिए गए थे जिन्हें इकट्ठे करके लगाने पर पूज्य नीरू माँ का चित्र बन गया और पूज्यश्री के साथ फोटो सेशन भी हुआ। शाम को एक घंटे के लिए जगत् कल्याण हेतु कीर्तन भक्ति के बाद पूज्य नीरू माँ की नई स्पेशल वीडियो फिल्म 'जगकल्याणी सेवा' दिखाई गई जिसका महात्माओं द्वारा सुंदर प्रतिसाद मिला। रात को नीरू माँ के पदों की विशेष भक्ति के बाद पूज्यश्री के सत्संग में महात्माओं द्वारा पूज्य नीरू माँ की ज्ञानदशा, मनोस्थिति व समर्पण भाव पर कई प्रश्नों पूछे गए। उससे पहले एनड्रोइड व IOS प्लेटफोर्म पर 'दादा भगवान एप' की नई डिज़ाइन/अपडेट के लिए वीडियो दिखाया गया। दादानगर हॉल के प्रांगण में YMHT boys/girls द्वारा विविध फोटोस् की आकर्षक फ्रेम तैयार करके प्रदर्शन के रूप में रखा गया।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada ✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
✦ **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST

UK ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
✦ **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
✦ **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

Singapore ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
✦ **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
✦ **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम से शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)

USA -Canada ✦ **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

UK ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore ✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia ✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand ✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर भारत

मैनपुरी **दिनांक : 25 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 7906704099
स्थल : दुर्गा मेरेज हॉल, बैंक कॉलोनी, स्टेशन रोड, मैनपुरी.

कानपुर **दिनांक : 26 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9452525981
स्थल : श्री मुनि हिन्दू इण्टर कॉलेज, गोविन्द नगर थाने के पास, गोविन्द नगर, कानपुर.

इलाहाबाद **दिनांक : 27 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9935378914
स्थल : कमला नेहरु इलेक्ट्रो होमियोपैथी मेडिकल इंस्टिट्यूट, रामबाग रेल्वे स्टेशन, रामबाग.

वाराणसी-चांदमारी **दिनांक : 29 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 7054267709
स्थल : CMG इंटर कॉलेज, लोढान, चांदमारी, वाराणसी.

वाराणसी-लालपुर **दिनांक : 29 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9807845728
स्थल : एस.एल. कॉन्वेंट स्कूल, गोवेर्धनपुरी कॉलोनी, लालपुर पुलिस चौकी के पास, लालपुर, पाण्डेपुर, वाराणसी.

वाराणसी-गढ़वा घाट **दिनांक : 30 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 7754941661
स्थल : मारुती नगर, गोपाल सेठ बिल्डिंग, शांडिल्य पब्लिक स्कूल के पास, गढ़वा घाट रोड, वाराणसी.

वाराणसी-पाण्डेपुर **दिनांक : 30 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9454699785
स्थल : राजेन्द्र वर्मा, 59/231, नई बस्ती, पाण्डेपुर, वाराणसी.

वाराणसी-गिलट बाज़ार **दिनांक : 1 मई** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9451808226
स्थल : संत अतुलानंद स्कूल, राज-राजेश्वरी नगर, गिलट बाज़ार, वाराणसी.

वाराणसी-बाबतपुर **दिनांक : 2 मई** **समय :** दोपहर 12 से 2 **संपर्क :** 8858414481
स्थल : दीनदयाल इंटर कॉलेज, पुराने चौराहे के पास, बाबतपुर, वाराणसी.

वाराणसी-रामनगर **दिनांक : 3 मई** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9305602519
स्थल : राजेश्वर शर्मा, 4/1616, सदभावना पुरम, कामाक्षी सिनेमा के सामने, रामनगर, वाराणसी.

वाराणसी-सोनारपुरा **दिनांक : 4 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9936756797
स्थल : श्री सनातन गौड़ीय मठ, भेलूपुर रोड, LIC ऑफिस के पास, सोनारपुरा, वाराणसी.

वाराणसी-डीरेका **दिनांक : 4 मई** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 7880653808
स्थल : संस्थान हॉल (सिनेमा के समीप), डीरेका (D.L.W), वाराणसी.

वाराणसी-BHU रोड **दिनांक : 5 मई** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 8416831100
स्थल : जे.एस.उपवन, करौन्दी चौराहा, B.H.U. रोड, वाराणसी.

वाराणसी-मंडुवाडीह **दिनांक : 6 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 8840327150
स्थल : निर्मल मार्बल हाउस, होरीलाल पार्क के सामने, मंडुवाडीह, वाराणसी.

वाराणसी-मुगलसराय **दिनांक : 6 मई** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9794849099
स्थल : 1478/ B, रेल्वे फिल्ड के पास, प्लांट डिपो कॉलोनी, मुगलसराय, वाराणसी.

गाजियाबाद **दिनांक : 18 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9911142455
स्थल : 521, सेक्टर 17-B, मदर डेयरी के पास, वसुंधरा, गाजियाबाद.

गाजियाबाद **दिनांक : 18 मई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9810386117
स्थल : 532, अर्जुन नगर, गोपाल मंदिर के पास, गाजियाबाद.

गाजियाबाद **दिनांक : 19 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9871093895
स्थल : C-264, पहला माला, दुर्गा मंदिर के पास, न्यू पंचवटी, गाजियाबाद.

गाजियाबाद **दिनांक : 19 मई** **समय :** शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क :** 9205727818
स्थल : सेक्टर-17-E, कोनार्क एन्क्लेव, मदर डेयरी के पास, वसुंधरा, गाजियाबाद.

दादावाणी

गुड़गाँव **दिनांक : 20 मई** **समय :** सुबह 11 से 12-30 **संपर्क :** 9899451490
स्थल : सनसिटी, सेक्टर-54, सेक्टर-54 चौक रेपिड मेट्रो स्टेशन के पास, गुड़गांव.

गुड़गाँव **दिनांक : 20 मई** **समय :** शाम 4 से 5-30 **संपर्क :** 9871436979
स्थल : 271B, मियांवाली कॉलोनी, गुड़गांव.

गुड़गाँव **दिनांक : 21 मई** **समय :** सुबह 11 से 12-30 **संपर्क :** 9911260900
स्थल : घर नं. 39/1, भीमगढ़ खेरी, गुड़गांव रेल्वे स्टेशन के पास, गुड़गांव.

गुड़गाँव **दिनांक : 21 मई** **समय :** शाम 6 से 7 **संपर्क :** 9899027412
स्थल : रेल विहार हॉल, सेक्टर-56, CNG पंप के सामने, सेक्टर-54 चौक रेपिड मेट्रो स्टेशन के पास, गुड़गांव.

हिसार **दिनांक : 22 मई** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9812022339
स्थल : श्री बूधला संत हनुमान मंदिर, ऋषि नगर, बस स्टेंड के पास, हिसार.

फरीदाबाद **दिनांक : 24 मई** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9501009538
स्थल : सेंट्रल पार्क, SRS मॉल के पास, सेक्टर-12, बाटा चौक मेट्रो स्टेशन के पीछे, पिल्लर नंबर 823, फरीदाबाद.

दिल्ली-सैनिक नगर **दिनांक : 25 मई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9810887780
स्थल : घर नं. B-102, सैनिक नगर, मेट्रो पिल्लर नं 741, नवादा मेट्रो स्टेशन के पास, पश्चिमी दिल्ली.

दिल्ली-शाहदरा **दिनांक : 26 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9999103406
स्थल : जैन स्थानक, बलबीर नगर, मेईन लोनी रोड, शाहदरा, पूर्वी दिल्ली.

दिल्ली-पश्चिम विहार **दिनांक : 26 मई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9999533946
स्थल : महाराजा अग्रसेन भवन, पट्रोल पंम्प के पास, ज्वाला हेरी मार्केट, पश्चिम विहार.

दिल्ली-शास्त्री नगर **दिनांक : 27 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9899525486
स्थल : L/265/2, ललिता स्कूल के पास, शास्त्री नगर.

दिल्ली-पीतमपुरा **दिनांक : 27 मई** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : लॉरेल हाई स्कूल, महाराजा अग्रसेन भवन के पास, फिरनी मार्ग, पीतमपुरा.

दक्षिण भारत

बेलगाम **दिनांक : 10-11 जून** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9945894202
स्थल : लक्ष्मीनारायण ट्रेडर्स, शहापुर पुलिस स्टेशन के पास, मेइन रोड, वडगाँव, बेलगाम.

निपाणी **दिनांक : 12 जून** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9902346946
स्थल : श्री विष्णु निवास, श्रीनगर लेन-1, मुरगुद रोड, निपाणी.

महालिंगपुर **दिनांक : 13 जून** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9741797501
स्थल : अम्बिका ट्रेडर्स, वेंकटेश अस्पताल के सामने, महालिंगपुर.

गोवा	**दि : 8-9 जून**	**संपर्क :** 8698745655	**दरियापुर**	**दि : 12 जून**	**संपर्क :** 8766516497
धारवाड	**दि : 14 जून**	**संपर्क :** 9480370961	**अकोला**	**दि : 13 जून**	**संपर्क :** 9422403002
हुबली	**दि : 15 जून**	**संपर्क :** 9513216111	**जलगाँव**	**दि : 14 जून**	**संपर्क :** 8806869874
बेंगलुरु	**दि : 16-17 जून**	**संपर्क :** 9590979099	**शिरपूर**	**दि : 15 जून**	**संपर्क :** 8856962916
नागपुर	**दि : 9 जून**	**संपर्क :** 9970059233	**औरंगाबाद**	**दि : 16 जून**	**संपर्क :** 8308008897
अमरावती	**दि : 10 जून**	**संपर्क :** 9422335982	**नासिक**	**दि : 17 जून**	**संपर्क :** 9325074635

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

चंडीगढ़ में पंजाब, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के महात्माओं के लिए आप्तपुत्र के साथ विशेष शिबिर

तारीख - **27 से 29 अप्रैल** , रजिस्ट्रेशन के लिए **संपर्क - 9779233493**

स्थल : बाबा मक्खन शाह लुबाना भवन, सेक्टर 30, चंडीगढ़.
शिविर का खर्च रु. 1000 (रु. 600 ठहरने का और रु. 400 भोजन का)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

9 मई (बुध)	– शाम 4–30 से 7	**पूज्यश्री सत्संग (पति–पत्नी का दिव्य व्यवहार)**
9 मई (बुध)	– रात 8–30 बजे से...	**पूज्यश्री के जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम**
10 मई (गुरु)	– सुबह 10 से 12–30	**सत्संग पारायण (माता–पिता बच्चों का व्यवहार)**
11 मई (शुक्र)	– सुबह 10 से 11–30	**पूज्यश्री सत्संग (माता–पिता बच्चों का व्यवहार)**
11 मई (शुक्र)	– शाम 5–30 से 7	**पूज्यश्री सत्संग (माता–पिता बच्चों का व्यवहार)**
12 मई (शनि)	– सुबह 10 से 12–30	**सत्संग पारायण (पैसो का व्यवहार)**
13 मई (रवि)	– सुबह 10 से 11–30	**पूज्यश्री सत्संग (पैसो का व्यवहार)**
13 मई (रवि)	– शाम 5–30 से 7	**पूज्यश्री सत्संग (पैसो का व्यवहार)**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा गुजराती में सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। अगर आपके मोबाइल में FMकी सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे। 3) शिविर में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

सेवार्थी शिविर

1–3 जून (शुक्र – रवि) – **सुबह विभिन्न कार्यक्रम,** शाम 4–30 से 7 – **पूज्यश्री सत्संग**

सूचना : अडालज में हो रही इस शिबिर में जो महात्मा अपने सत्संग सेन्टर में साल भर नियमित सेवा दे रहे है या फिर जन्म जयंती, प्राणप्रतिष्ठा जैसे दो बड़े कार्यक्रम में सेवा दी हो, ऐसे महात्मा जुड़ सकते है। इस शिविर में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन अपने सेन्टर द्वारा होगा, उसकी जानकारी कुछ ही दीनों में आपके सेन्टर पर दी जाएगी।

सुरत

19 मई (शनि) रात 8 से 11 – **सत्संग** (**टोपिक**–वाणी के झगडे मिटाये समझ से)

20 मई (रवि) शाम 7–30 से 11 – **ज्ञानविधि**

21 मई (सोम) रात 8 से 11 – **आप्तपुत्र सत्संग** **संपर्क :** 9574008007

स्थल : श्री आत्मानंद सरस्वती विद्या संकुल (धारुका कोलेज), कापोद्रा पुलीस स्टेशन के सामने, वराछा रोड, सुरत.

वापी

21 व 23 मई (सोम व बुध) शाम 7 से 10 – **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **22 मई** (मंगल) शाम 6–30 से 10 – **ज्ञानविधि**

स्थल : VIA ग्राउन्ड, GIDC चार रस्ता, वापी, जि– वलसाड **(गुजरात).** **संपर्क :** 9924343245

पटना

9 जून (शनि) शाम 5–30 से 8–30 – **सत्संग** तथा **10 जून** (रवि) शाम 5 से 8–30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : रविनद्र भवन, वीरचंद पटेल पथ, पटना सर्किट हाउस के सामने, पटना. **संपर्क :** 7352723132

11 जून (सोम) शाम 5–30 से 8–30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : भारतीय मंडपम, (सिका होल) विद्या पाटी भवन के पीछे, विद्या पाटी मार्ग, पटना.

वाराणसी

12 जून (मंगल) शाम 5–30 से 8–30 – **सत्संग** तथा **13 जून** (बुध) शाम 5 से 8–30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : श्री नागरी नाटक मंडली, कबीर चौरा चौक, वाराणसी. **संपर्क :** 7905794250

14 जून (गुरु) शाम 5–30 से 8–30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : गाँधी अध्ययन पीठ, गेट नं.3, इग्लिशिया लाइन क्रोसिंग, वाराणसी. **संपर्क :** 9454365491

दिल्ली

16 जून (शनि) शाम 5–30 से 8–30 – **सत्संग** तथा **17 जून** (रवि) शाम 5 से 8–30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली. (अन्य जानकारी के लिए – 9999533946) **संपर्क :** 9811332206

अप्रैल 2018
वर्ष-13 अंक-6
अखंड क्रमांक - 150

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2017
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

बुज़ुर्गों की सेवा से खिलता है विज्ञान

बुज़ुर्गों की सेवा करना तो सब से बड़ा धर्म है। युवाओं का धर्म क्या है? बुज़ुर्गों की सेवा करना। यदि आप पुरानी गाड़ी को धकेलकर ले जाएँगे, तब बुढ़ापे में आपको भी धकेलने वाले मिल जाएँगे। यह तो देकर पाना है। अगर हम बुज़ुर्गों की सेवा करेंगे तो हमारी सेवा करने वाले मिल जाएँगे। यदि आप बुज़ुर्गों को हाँकते रहेंगे तो कोई आपको हाँकने वाला मिल जाएगा। जो करना हो उसकी छूट है। बुज़ुर्गों की सेवा करने से अपना विज्ञान खिलेगा। क्या मूर्तियों की सेवा की जा सकती है? क्या मूर्ति के पैर दर्द करते हैं? सेवा तो माँ-बाप, बुज़ुर्गों या गुरु हो उनकी करनी चाहिए।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.